

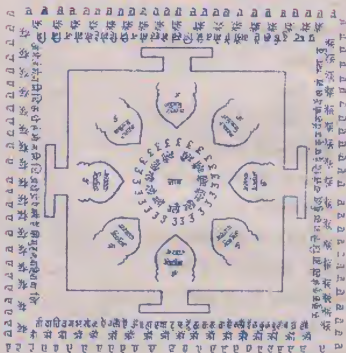
Malay

May 87

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान



वातीली सप्तमन यन्त्र



मई १९८७

विषय-सूची

* प्राबंदा—	१
* श्री बटुक भैरव प्रयोग—चन्द्रालोक पट्ट	२
* लिविर : सिद्धिया—	५
* समाचार एवं सूचनाएं	७
* कुण्डलिनी यों जगती हैं	६
* महादेव्य नमोस्तुते—मोहन कुमार वाक्व	१३
* निश्चित सिद्धिदायक प्रयोग—योगिन्द्र विनोदी	१६
* यह जीवन ज्ञान यज्ञशाला है—	२०
* स्वर्ग सिद्धि : कोई कठिन नहीं है स्वर्ग बनाना	२३
* परकाया प्रवेश : धाज के युग में भी संभव है	२७
* आश्चर्यजनक शक्तियाँ हैं—छटी इन्द्रिय में—सुरेश कुमार	३०
* वह पल प्रतिपल सुन्दर होती जा रही है	३६
* सौन्दर्य पाक निर्माण विधि	४०



वर्ष—७

अंक—५

मई १९८७

सम्पादक
नन्दकि

सं० सम्पादक
दामोदर मि

सम्पादक

संज्ञ-संज्ञ-संज्ञ

डा० श्रीमान्नी
हार्डकोर्ट कोलोन
३४२००१ (रा)

टेलीफोन : २२

मुद्रक धरविन

वर्ष—७

अंक—४

मई १९८७

सम्पादक
नन्दिशोर

सं. सम्पादक
योगेश्वर निमोही

सम्पर्क—

मंत्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डा० श्रीमानी मार्ग,
हार्डकोट कोवोनी, जोधपुर-
३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : २९२०६

आनो भद्राः कृतयो यस्तु विद्वतः

मानव जीवन की सर्वतोःमुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गुरुविद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्राथना

ॐ इन्द्रः बभौ सूर्यस्य वैवो रथ महो क्रिया एतावदान्यः

हे इन्द्र ! आप हमें सूर्य की तरह तेजस्वी बनाने हूँ। हमारा
जीवन-रथ निरन्तर उन्नति की धार घूमकर होता रहे और हम
जीवन पर्यन्त सक्रिय बने रहें ।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं पर अधिकार पत्रिका का है,
पत्रिका का वार्षिक छठे भाग का सम्पन्न हो दो वर्ष के मध्यस्थता मुक्त के
बराबर है, जोतः धर्म सभी अंक, जब तक प्रकाशित हो, निःशुल्क सम्पन्न
पत्रिका का दो वर्ष का मध्यस्थता मुक्त (१३०) ४०, एक वर्ष का (७०) २०
तथा एक अंक का (मुक्त ६) ४० है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक
का सहन होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक, पत्रिका
में प्रकाशित रचनाओं की मूल्य समीक्षा, किसी स्थान, नाम या शब्द का
किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई चर्चा, नाम या शब्द मिला जाय
तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक धूमकड़ साधु-मन्त्र होने हैं
यतः उनके बल या उनके बारे में कुछ अन्य जानकारी देना संभव नहीं
होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-
विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा, और न इसके लिए लेखक, प्रकाशक,
मुद्रक या सम्पादक विम्बदार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद
में जोधपुर स्थित ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी
सामग्री में सफलता-असफलता इतिहास आदि की विम्बकारी मासिक
की स्वयं की होगी, तथा मासिक कोई ऐसी उपासना, उपाय या मन्त्र प्रयोग
न करे, जो वैज्ञानिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो।
पत्रिका में प्रकाशित एवं प्रकाशित सामग्री के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार
की आपत्ति या धातुधनता स्वीकार नहीं होगी, पत्रिका में प्रकाशित छात्र-
विक्रय विषयों का प्रयोग अपनी विम्बकारी पर हो कर किसी मासिकी
लेखकों के मासिक विचार होंगे हैं, उन पर मासिक का प्रकाशन पत्रिका के
कर्मचारियों की तरफ से होता है।

मुद्रक अरविन्द प्रकाशन डा० श्रीमानी मार्ग, हार्डकोट कोवोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

रोग समनार्थ एवं पंच प्रयोग हेतु

श्री बटुक भैरव प्रयोग

सम्यग्-मात्र केवल उच्चकोटि के तान्त्रिकों की ही वपीनी नहीं रही है, और यह भी प्रावश्यक नहीं है, कि मन्त्र में गहन पूजा पड़ति या मन्त्र चर्चा हो, कुछ साधनाएं ऐसी हैं, जो अपने माय में मित्रिभावक एवं सफलतादायक हैं, जिनके लिए न तो किसी प्रकार के विधि विधान की जरूरत है न पूजा पड़ति की, न ही श्राद्ध बंध कर मात्र जगत्-कर्म की आवश्यकता है, और न लम्बे बीदे शासन प्राप्तगमन साधि की।

बटुक भैरव याचना ऐसी ही तेजस्वी, बीघ्र मित्रि-भावक और महत्त्वपूर्ण है, इसे पुरुष या स्त्री कोई भी सन्धक कर सकता है, यह साधना सरल है, और बीघ्र सफलतादायक है।

कुछ वर्षों पहिले मैं जब हिमालय में पूर रहा था, तो मुझे उत्तराखण्डी के पास एक श्रोत्रिण बाबा मिले, उनकी चर्चा मान पास बहुत से और वे निस्वार्थ भाव से लोगों का कल्याण करने में सहायक थे, खास-तौर से पांच प्रकार के कायों में उनकी चर्चा विशेष रूप से थी।

१—सोये गये बालकों या पुत्रों का पत्र लगाना—बालक जो जति है, या उनका प्रपहरण कर बिना जाता है, इसके उनके माना पिता के मन में कितनी त्रैवना और दुःख होता है, इसके जो कोई भुक्-भोगी हा समझ

सकता है, श्रोत्रिण बाबा अपने कर्म में जाते और पांच मिनिट बाद वापस हो बता देते कि मुझा तुम्हा बालक पुरुष या स्त्री इस समय कहाँ पर किस के साथ है और किस स्थिति में है।

२—किसी भी प्रकार की रोग समाप्ति के लिए—इस कार्य के लिए भी श्रोत्रिण बाबा की चर्चा दूर-दूर तक फैली हुई थी, कोई भी पुरुष या स्त्री उनके आश्रम में घाता, वह चाहे बुधवार से पीड़ित हो या अन्य रोग में। बाबा अपने सामने पानी का मिश्रण मंगवाते और अपने हाथ पर कण्ठा हुआ मन्त्र उस पानी की मिश्रण में डालकर कुछ हिलते और इसके बाद वह अपनी रोगी को पीने के लिए दे दिया जाता, यहि क्षतर तो पड़ती बार में ही प्राणशुक्ल पुरुष या स्त्री का रोग समाप्त हो जाता कल्पना कोई सम्भवी बीमारी हाती तो बार पांच बार ऐसा प्रयोग करते बार यह कानो राहत अनुभव करता और बाबा के प्रति उनके मन में धर्मोत्तम बढ़ा पैदा हो जाती।

३—चोरी का पत्र लगाना—कई बार घर के सबन्ध या बीर-बाकर चोरी कर लेते हैं, या बाहर के कोई आँक रात को चोरी करके चले जाते हैं, फिर उन चोरों का पता नहीं चलता, इसमें उस आदमी का मन तो बरबाद होता ही है, समाज में भी घममास होता पड़ता है, इसके धनावा उसे मानसिक सताप और

उपशान्ति का इतना भी कामोत्र दुःख ही चिन्ति में भी बाधा पड़ पांच मिनिट के बाद ही कन्तु इस समय कहाँ।

४—बाजीकरण

जाता है या अपनी समझने पर भी नहीं मन्त्रेव हो जाते हैं, वे किसी भी स्थिति में एक होता है, बाबाओं वाली, तब बाबाओं की बाजीकरण करना है उस पुत्री का उम्मीद जिससे कि वह अपनी पुत्र का पिता से चर्चा पूरा अपने पिता की क जाता लया उसका क प्रकार सत्य कानों में सुटिया में जा कर पा जाते और कहते कि निश्चित होकर घर।

५—कर्म मर्दन

स्वयं है, तो प्रकाश अनु किसी न किसी कान्ति में सगा भाई-बन्धु कोई व्यक्ति हो हो सकता है, पुरुष व्यक्ति हो सकते इस प्रयोग से होते हैं तो इस प्रयोग को है, और कान्ति भूत

ये पाँचों प्रयोग

वर्जयित्वा इतनी शक्ति प हावी है कि यह जरूरत से उगाया कमजोर, तुलना श्री एक तरह से मृन्मय हो जाता है, ऐसी स्थिति में भी बाबा ध्वनी कुटिया में जाते और बार बार मिनट के बाद ही धाकर जग देते कि बोरी गई बन्धु इत समझ कहें पर है ।

४- बलीकरण प्रयोग—7ई बार पुन कुटुन ही जाता है या अपनी पुत्री के कदन बहक जाते हैं, और समझने पर भी नहीं तबझने: प्रपत्ता पति पत्नि में सतभेद हो जाते हैं, प्रेमी या प्रेमिका रुठ जाती हैं, ऐसी किसी भी स्थिति में बलीकरण प्रयोग पूर्ण रूप से सहा-यक होता है, बाबाभी के सामने भी ऐसी कई स्थितियां घटी, तब बाबाभी यह पुत्र लेते कि किस का किससे बलीकरण करना है- यदि पुत्रों के कदन बहक गये हैं तो उस पुत्री का उसकी मां से बलीकरण कर दिया जाता जिससे कि वह अपनी मा के कहने में चलने लगती, या पुत्र का पिता से दलीकरण कर दिया जाता जिससे वह पुत्र अपने पिता को प्राप्ता मानने के लिए उत्तर हो जाता तथा उसका मूलन रास्ता सही हो जाता, इसी प्रकार अन्य सभी में भी इसका प्रयोग बाबाजी अपनी कुटिया में सा कर पाच-छह दस मिनट के लिए बाहर जाने और कहते कि मैंने प्रयोग कर दिया है, अब साप निश्चित होकर घर जाय आपका काम हो जायेगा ।

५- शत्रु मर्दन प्रयोग—समाज में यदि मित्र या स्नेहज है, तो बाकारण शत्रु भी बहाने होते हैं, मोर-ये शत्रु किसी न किसी प्रकार से परेशान करते रहते हैं, इस शत्रुओं में सगा भाई हो सकता है, पटोमी हो सकता है, अन्य कोई व्यक्ति हो सकता है, व्यापारिक प्रतिस्पर्दी हो सकता है, पुरुष या अन्य राज्य वल से संबंधित व्यक्ति हो सकते हैं, मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि इस प्रयोग से कोई भी व्यक्ति शत्रु भाव रखता है तो इस प्रयोग को करने से उसकी मनोवृत्ति बदल जाती है, और शत्रुता भूत कर उसका सहायक बन जाता है ।

ये पाँचों प्रयोग प्राज्ञ के मुन के ध्येयगत ही महत्त्वपूर्ण

और आवश्यक प्रयोग हैं, या यों कहा जाय कि इनकी आवश्यकता प्राज्ञ के समाज में बहुत अधिक बढ़ गयी है प्रत्येक व्यक्ति को पत्र पत्र इन समस्याओं से घुलना पड़ना है, और यदि कोई मायक या व्यक्ति इस प्रकार की कोई मुक्ति या मायना मोक्ष ले तो वह हजारों लोगों का बलदाण कर सकता है ।

मैं थोड़ा साधा के समझ में लाने का सात रहा, और मैंने तब-तब से उनकी सेवा की, मैं उस साधना की सम्यक् दक्ष जित साधना के बल पर थोड़ा साधा उपरोक्त पाँचों प्रयोग सम्पन्न करते हैं और हजारों लोगों लोगों का कल्याण करते हैं, इसके उन्हें अद्वितीय सफलता यश और सम्मान तो मिलता ही है, वन और सुख भी जरूरत से ज्यादा प्राप्त होता है ।

कुल वर्षों बाद मुझे बाबाभी ने ही बात ह्वा कि बहुत भैरव साधना से ये पाँचों सिद्धियां स्वयं प्राप्ता हो जाती है, बाद में मेरी सेवा से अनुप्राणित हो कर उन्होंने रूप कर बहुत भैरव साधना मुझे दिखा दी, और उसकी पूर्ण प्रामाणिक विशिष्ट भी स्पष्ट कर दी जिसे मैंने शान्ति चम कर सिद्ध किया तथा सफलता प्राप्त की ।

इसके नियम और साधना विधि इस प्रकार है—

१- इसके लिए सिद्ध बहुत थैरव वन की पाव-शुद्धता होती है जो दारिद्र्य के साकार का होता है तथा जो बहुत भैरव चेतना से पुष्ट एवं प्रभु किया से सम्भव होता है ।

२- निम्न मंत्र जप नियम करें, और थोड़ा दिन करने पर यह साधना सिद्ध हो जाती है जिस से वह उप-रोक्त पाँचों स्थितियों में दूसरों का कल्याण करने में समर्थ हो ।

३- वह दिन या रात्रि को सभी भी सम्यक् को जा सकती है, सात आसन बिछा दें, दक्षिण दिशा की ओर मुंह करें, स्वयं लाल धोती या स्त्री हो तो लाल साड़ी पहिन ले सावने बहुत भैरव मंत्र को रख दें और मूत्र

की माना वे मंत्र जप करें, इसके फलवा ग्रन्थ किसी विधि विधान की प्राप्यकता नहीं है ।

प्रयोग :-

जब चौदह दिन का प्रयोग सिद्ध हो जाता है, तो यह तारीख अपनी राह पर बाध देना चाहिए और फिर उन्नोक्त राशियों मन्त्रवाचों में से कोई समस्त भाषी है तो अपनी मुठ्ठी में यह मंत्र ले कर प्राणों काट कर केवल पांच बार मंत्र उच्चारण करने से उसे दिखाई देने लग जाता है कि छोया हुआ बालक कहाँ है, या चोरी किया की है, और धन कहाँ पर है अपना यह मुठ्ठी में ले कर कहाँ जाय कि समुक्त लड़की का माँ से मिलीकरण हो

जाय और फिर पांच बार मंत्र उच्चारण करें तो बलीकरण हो जाता है, यह सभी प्रकार किया जाता है, रोष मुक्ति हेतु पानी की मिश्रण में उपरोक्त मंत्र घुमा कर पानी पीता देने से रोष मुक्ति में सफलता प्राप्त होती है ।

मन्त्र

ॐ ह्रीं बटुकाम आपुदुदाराय कुरु कुरु बटुकाम ह्रीं ॐ ।

वास्तव में ही यह मन्त्र दिवने में अत्यन्त मन्त्र प्रवीत होता है, परन्तु इसका प्रभाव तुरन्त और निश्चित होता है ऐसा ऐसा अनुभव रहा है, साथ इसके अनुभव कर लाभ उठा सकते हैं ।

प्रतिक्रिया

तारा साधना कापके लक्षणों का साधन में बहुमूल्य के लिये यह साधना का कर्म का है, पूरा के होता है, परन्तु यह साधन और प्रयोग कापका ग्रन्थ का प्रयोग

वारिक सत्यक बनाकर उन्हें पूरे वर्ष भर प्रति माह निश्चित रूप से पत्रिका भेजी जाती रहनी ।

१- इस प्रकार कापका मन्त्र में यह सर्व सिद्धि युक्त और उन्नत प्राप्त कर सकते हैं ।

सर्वसिद्धि युक्त बटुक भैरव यन्त्र

१- मेरे निज का नाम

पता

२- मेरे मित्र का नाम

पता

३- सर्व सिद्धि युक्त बटुक भैरव यन्त्र मुझे दृष्ट करने पर भजे ।

मेरा नाम

मेरा पता

सर्वसिद्धि बटुक भैरव यन्त्र

१- सर्वजनहितार्थ इस सर्व सिद्धि युक्त बटुक भैरव यन्त्र के लिए कोई धनराशि नहीं ली जायेगी ।

२- प्रदीप की सिद्धि-प्रसिद्धि या प्रयोग से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी मंत्र-तन्त्र-यन्त्र पत्रिका या इससे सम्बन्धित व्यक्तियों की नहीं होगी ।

३- नीचे दिये गये प्रयोग की प्रथमा प्रत्येक कामज पर काप करने दो दिनों के पूरे पते साध-साधक लिख दें या तो इससे काप सत्य-नसत्य रूप से से या काप अपनी तरफ से भ्रष्ट करके उन्हें सत्य बना दें ।

४- यह प्रयोग पाठ कर प्रथमा किसी कामज पर दो दिनों के पते लिख दें, यह लिखने में रख कर हमें बिजवा दें, तब हम धारा की (१५०) की बी०पी० ले यह यन्त्र सर्व सिद्धि युक्त भैरव यन्त्र रूप में भेज देंगे पोस्टमन की (१५०) रु०केर काप यह बी०पी० प्राप्त कर से और प्रयोग सम्पन्न करें, बी०पी० छुटने पर काप द्वारा दिये गये दोनों व्यक्तियों की पत्रिका का

पर पाकर भी कल रात्रि की हो- दर्शन प्राप्त हुए, ऐ- दृष्टा है, और इसका

कापके तारा ।

के इस निर्णय पर । सभी प्रत्येक साधन में सम्पन्न की है, की लोडरी प्राप्त है पर मेरे लिए तो तारा साधना सम्पन्न हो मुझे प्रत्येक के दलित बना प्रसार ।

दिये कापके यह

साधना शिविर : सिद्धियां

प्रतिक्रिया

हमारा साधना में मैंने पहली बार अंधपुर आकर आपके संप्रत्यक्ष भवन में बैठ कर साधना सम्पन्न की और आज मैं महसूस करता हूँ, कि यह मेरा सौभाग्य था, कि मैंने यह साधना आपके यहाँ आकर पूरी की, मैं पचास वर्ष का हूँ, पूरा जीवन छोटी मोटी साधनाओं में ही बीता है, परन्तु पहली बार तारा से सम्बन्धित सूक्ष्म ज्ञान और प्रासादिक अनुकूलि इस शिविर में प्राप्त हुई, आपका आधिक प्रवचन जो उद्भवित रहा है।

पर आकर मैंने इस साधना को सम्पन्न किया, और कल्प राशि को ही मुझे समझती महाविद्या तारा के दिव्य दर्शन प्राप्त हुए, ऐसा सौभाग्य जीवन में पहली बार हुआ है, और इसका श्रेष्ठ आपकी ही जाता है।

—रामाशंकर पाठक, कानपुर।

आपके तारा साधना शिविर में भाग लेने के बाद मैं इस निर्णय पर पहुँचा हूँ कि आपके यहाँ सम्पन्न होने वाली प्रत्येक साधना शिविर को छोड़ नहीं, तारा साधना मैंने सम्पन्न की है, और मुझे पहली बार स्वयं हुआ है जो लोहरी प्राप्त हुई है, भले हो यह पावना पुरस्कार है, पर मेरे लिए तो दरिद्रता मिश्रित का अछूततम साधन है, तारा साधना सम्पन्न दो दिन पहले पूर्ण की है, और आज ही मुझे सबबद्ध के साधन से यह समाचार मिला है, इससे बड़ा अम्मान और और सौभाग्य क्या हो सकता है?

—अनसूया भार्गव, यम्बई

मैंने आपके यहाँ सम्पन्न सप्तराशि में तारा साधना

शिविर में भाग लिया था, और पहली बार लगा कि जीवन का आनन्द क्या होता है, पहली बार अनुभव हुआ कि अस्मिन् जीवन कितने अमोघ होता है, पहली बार पवित्रता और विभक्तता का अनुभव हुआ, और यह पहली बार जान हुआ कि एक और दिव्य किस प्रकार आत्मने सामने बैठ कर ज्ञान चर्चा करते हैं, आपके प्रवचनों के माध्यम से जो कुछ प्राप्त हुआ है, मेरे जीवन की पूँजी है।

पिछले छठ वर्षों से मेरे दो लाख रुपये एक व्यापारी में कल गये थे, और वापिस प्राप्त होने के आसार ही नहीं थे, पर वह मां भगवती की कृपा बड़ी कृपा है, कि जिस व्यापारी से मैं रुपया वापिस प्राप्त होने की उम्मीद ही छोड़ बैठा था, वह व्यापारी ने अज्ञान रूपका सचानक मेरे घर आकर दे गया है, और गेय धनराशि भी अपने सहोदरे देने का वाचन किया है, यह सब मां भगवती की कृपा और साधना का फल ही तो है।

—रामलाल कानूंगा, दिल्ली

मैंने आपके यहाँ पिछले दिनों सम्पन्न हुई कुण्डलिनी साधना शिविर में भाग लिया था, और यह पूरा शिविर अपने आप में अद्वितीय हो कहा जा सकता है, यहाँ का आगरा तथा कुण्डलिनी आगरा से सम्बन्धित जो आप ने ज्ञान और अनुभूति दी है, वही अनुभूति जो इस सारतर्क में तो अन्य कोई योगी या गुरु दे नहीं सकता, ऐसा लगता है, कि पूज्य एस्तेव के कष्ट में तो साधना

मरगती दिखाने हैं, जब वे बोले हैं तो ऐसा लगता है जैसे समुद्र का मरना वह रहा हो।

मैंने घर धाकर चको के जाबरता की प्रक्रिया प्रारम्भ की, धीरे धिमेले एक सप्ताह से मुझे विविध अनुभव हो रहे हैं, मैं ज्योंही ध्यान मान होता हूँ, निमानव के रूप धीरे धिमेले का पावन चरित्र दिखाई देने लगता है, कन रात्रि को मुझे घनते दृष्ट भगवती युग्म के साक्षात् दर्शन हुए, ऐसा मनोवैकिक रूप कुण्डलिनी जागरण के माध्यम से हो सम्पन्न हुआ है, कि मैं युग्म ने मुझे पापी की दृष्टि देकर कृतार्थ कर दिया है, वास्तव में वह मेरे जीवन का महितीय गिरिज का।

—ज्ञानदेव शर्मा, जयपुर

तन्त्र साधना शिविर में पूज्य गुरुदेव ने बहुत अधिक ज्ञान और दर्शन अधिक साधना पद्धतियाँ बता दी थी, कि सात-आठ शिविरों में जो ज्ञान दिया जाता है, वह इस एक शिविर में ही उन्मोहित हूँ प्रदान कर दिया था, वास्तव में ही यह मेरे जीवन का अभिप्राय था, कि मैंने इस महत्त्वपूर्ण शिविर में भाग लिया।

उन्होंने हूँ सम्मोहित साधना विधि समझाई थी, और घर पर साकर मुझे एक घर ऐसा प्रयोग करना पड़ा, और धारण है कि जिसे प्राप्त करने के लिए मैं तीन मास ने प्रयत्न कर रहा था, वह स्वतः मुझे प्राप्त हो गई और वापिस अपने स्थान पर लौट सम्बन्ध बन गये।

यह इससे ज्यादा और क्या प्रमाण चाहिए, कि जो कार्य हजारों रुपये खर्च करके भी नहीं कर सके वह कार्य एक छोटे से प्रयोग से सम्पन्न हो गया, इससे बड़ा हीमांश धीरे तन्त्रों की प्रामाणिकता क्या हो सकती है।

—वैद्यनाथ शर्मा, पुना

मेरी इसका कई वर्षों से कर्मा विज्ञानिनी साधना सम्पन्न करने की थी, और मैंने इसके लिए प्रयत्न भी बहुत किया, इस बार मैंने तन्त्र साधना शिविर में भाग लिया, और पशुपी बार कर्मा विज्ञानिनी साधना से

सम्बन्धित मुझे किया और मुझे रहस्यों का ज्ञानकारी प्राप्त की।

मैंने घर धाकर पूज्य गुरुदेव द्वारा बताई हुई विधि से ही कर्मा विज्ञानिनी साधना सम्पन्न की और पशुपी ही बार में यह साधना पिट हो गई, इन पंक्तियों के साध्य से मैं तन्त्रिक को संतुष्ट होता हूँ, कि वह कभी भी किसी भी साधक के ही साधना की परीक्षा ले सकते हैं, मैं एक क्षण में ही उसकी देखकर उसका पूरा मुक्तकाल खण्ड करने में समर्थ हूँ।

—मुरली मनोहर द्विवेदी, वाराणसी

तन्त्र साधना शिविर में भाग लेने के बाद ज्ञान घर धाकर मैं अनुभव करता हूँ, कि मेरे जैसा सीमावर्ती साधक ही कोई व्यक्ति होगा, तन्त्र से सम्बन्धित जितना ज्ञान और किया मैंने सीखा है, वह ही साधक में सागर की तरह है, इसका तो यह होती है, कि मैं सब काफ ज्ञान छोड़ कर जितने भी शिविर लग रहे हैं, उन सभी शिविरों में भाग लूँ और जीवन का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करूँ।

मैंने अनुभव किया है कि साधना शिविरों में उपकरणों और सामग्री की जिस प्रकार से मुख्य प्राण-ध्वस्तता युक्त बताते हैं, और साधना मन्त्र में ही जिस प्रकार से प्रयोग सम्पन्न कराते हैं, उसके उन सामग्री की महत्ता बहुत अधिक बढ़ जाती है, घर धाकर उनके बताए हुए तरीके से ही एक मनोकरण प्रयोग सम्पन्न किया और पशुपी ही बार में मुझे सकलता मिल गयी, मैंने एक ऐसा कार्य किया है, जिसकी कोई विफलता ही नहीं है।

वास्तव में ही यह शिविर मेरे लिए तो पूर्ण सीमावर्ती साधक रहा है, वास्तव में ही वे प्रमाण हो गये हैं, जो घर पर पड़े रहते हैं, और शिविरों में भाग ले नहीं पाते।

—रामराज देवड़ा, बम्बई



शिविर साधना

पिछले शिविर सम्पन्न स्थिति है, का जो उल्लास, वष में ही धारणजनक ज्ञान प्राप्त करने के स्थिति में अपनी वास्तव में ही पूरे शिविरों का ज्ञान वास्तव में ही शिविरों के ज्ञान कि वास्तव में ही साधक है।

मैंने हृदय के प्रत्येक शिविर का साधना शिविर की थी कि वे किसी और सकलता प्राप्त शिविर है।

साधक साधना है, इस प्रकार तन्त्र साधक साधक साधक साधक के लिए भी है, इसका ज्ञान का पूरा कर सकते

सबसे प्रत्यक्ष

* समाचार एवं सूचनाएं *

शिविर साधना

विद्यार्थी महिती हवने तीन-चार साधना शिविर सम्पन्न भिये है, और इन साधना शिविरों में साधकों का जो उत्साह, लगन, और मोचना देखी है, वह वास्तव में ही आश्चर्यजनक है, साधकों में साधना सीखने की, ज्ञान प्राप्त करने की, एक ललक है, और वे प्रत्येक स्थिति में अपनी इन इच्छाओं की पूर्ति कर रहे हैं, वास्तव में ही पूरे भारतवर्ष में फैले हुए, साधक तो इन शिविरों का लक्ष्य ठाढ़ा ही रहे हैं, विदेश के भी एक-दो साधकों ने इन शिविर में भाग ले कर अहसास किया है कि वास्तव में ही ये शिविर जीवन की पूर्णता के आधार हैं ।

मई में हवने चार महत्वपूर्ण शिविर एले हैं और ये प्रत्येक शिविर अपने-अपने आयोजक हैं, बमलापुरी साधना शिविर की तो साधकों की कई बड़ों के प्रतीक्षा थी, कि वे किसी महाविद्यालय साधना शिविर में जाय ले और तकलीफ प्राप्त करें, उसके लिए वह औसाखदायक शिविर है ।

साबर साधना सिद्धि शिविर तो इतने वर्षों की सीमांत है। इस प्रकार तम्र साधना शिविर में भाग न लेने पर साधक साबतक चलाता रहे है, उनके लिए और अन्य साधकों के लिए भी यह एक पवित्री साधना शिविर है, इसका नाम वे इन महत्वपूर्ण शिविर में भाग ले कर पूरा कर सकते हैं ।

पश्चिमी प्रत्यक्ष सिद्धि साधना के बारे में तो कुछ

कहना ही व्यर्थ है, जो साधक इस शिविर में भाग नहीं लेगे, वाद में हाथ मलने के मतलब उनको पान कुछ नहीं बचेगा, यह शिविर प्रत्येक पत्रिका पाठक और साधक के लिए औसाखदायक है, हमारी राज में तो हर एक सदस्य को इस शिविर में भाग लेना ही चाहिए ।

पश्चिम में यह कहें कि मुख्य निजाम साधना शिविर पूरे विश्व का औसाखदायक शिविर कहा जा सकता है, और जिस प्रकार से साधकों के पत्र चल रहे हैं, उससे ऐसा लगता है कि उन्हें इस शिविर में भाग लेने का कीज है, यह शिविर भी अपने-अपने औसाखदायक और आयोग्यकारक है जिससे हम महत्वपूर्ण ज्ञान और साधना चिन्तन को प्राप्त कर सकेंगे ।

साधकों के अनुरोध पर ही, हमने ये शिविर रखे हैं और ये शिविर आप सभी साधकों को ही समर्पित है, मुख्य विश्वास है कि आपमें से प्रत्येक सदस्य और साधक इन शिविरों का आनन्द ले सकेंगे और जीवन की पूर्णता प्राप्त कर सकेंगे ।

समर्पण दिवस

२१ मई को मुख्य गुरुदेव का जन्म दिन प्रशस्त ही बड़ा-बड़ा मे मनाया गया, इसमें पूरे भारतवर्ष से सैकड़ों-सैकड़ों साधक और शिष्य एकत्र हुए, दिन भर इन शिष्यों के घांते का सांता लगा ही रहा, पूरा दिन अपने-अपने विविध साधनाओं में संबंधित था, जिसमें इन सभी ने भाग ले कर पूर्णता प्राप्त की, सभी के चेहरे प्रसन्न थे, सभी के हृदय में आनन्द और उमंग,

उत्साह और प्रसन्नता थी; नाम की प्रीतिभोज हुआ और इस प्रकार अत्यन्त ही मन्त्र तरीके से यह दिवस सम्पन्न हुआ ।

धनराशि अभी न मेजें

पृष्ठ दो पर अंकित महत्वपूर्ण प्रयोग है, और इसके लिए जो बहुत धैर्य वन दिया गया है, वह अत्यन्त ही सिद्धिदायक तथा प्रभावशाली है, इसके लिए प्रायः धनराशि न भेंजे, बस मन्त्र प्रायः पत्रिका के दो पद्यों के नाम लिख कर भेंज दें या तो प्रायः पृष्ठ ४ पर प्रकाशित प्रपत्र को मर कर भेंज दें, या अत्यन्त कामज पर उत्तर कर भेंज दें, इससे प्रायः को ० पी० से सुस्थिति रूप से यह उपहार प्राप्त हो जायेगा जिसका कि प्रायः उपरीक्त अपनी साधना में प्रयोग कर सकेंगे और प्रायः जिन को पत्रिका तदर्थ भगावेंगे, वे पूरे सर्व धन प्रायः प्रति कृतज्ञ रहेंगे ।

यह वन सीमित संख्या में ही मन्त्र सिद्धि किये हुए है, अतः जितना जल्दी हो सके प्रायः इसे भंगा ले, मन्त्र समाप्त होने पर हम भेजने की विधि में नहीं जुँगे ।

परकाया प्रवेश

पृष्ठ २९ पर 'परकाया प्रवेश सिद्धि यन्त्र' के बारे में विवरण प्रकाशित हुआ है, यह सिद्धि यन्त्र अपने प्रायः में दुर्लभ यन्त्र कहा जाता है और इस पर विशेष पद्धतियों से मन्त्र सिद्धि सम्पन्न करवा कर यन्त्र भेजने की व्यवस्था होती है, इस पर व्यय (००) २० धा जाता है ।

पर धनराशि लेकर वह यन्त्र नहीं भेजा जायेगा, प्रायः पत्रिका के पाँच तदर्थ बना कर उनके पूरे नाम पते

व ३५०) २० का बैंक ट्रायल या मनीऑर्डर भेज देंगे, तो यह यन्त्र मुनिभूत रूप से प्रायः को भेजने की व्यवस्था हो सकेगी, मनीऑर्डर जब प्राप कर दें तो पाँच व्यक्तियों के पूरे पते लिख कर मनीऑर्डर को रसीद साथ में संलग्न कर दें और यह लिख दें कि यह यन्त्र यन्त्र के लिए धनराशि भेजी जा रही है ।

इस प्रकार के मात्र साठ-इस यन्त्र ही फिलहाल तैयार करवाये गये हैं, अतः यदि प्रायः जल्दी ही यह वन भगाते हैं तो प्रायः को भेजने में हमें सुविधा होगी ।

अतीन्द्रिय यन्त्र

पृष्ठ २५ पर अतीन्द्रिय यन्त्र का उल्लेख आया है, इस पर स्पष्टीकरण (१५०) २० है, और धनराशि भेज कर प्रायः इन यन्त्र को चाहें तो प्राप्त कर सकते हैं ।

सूत्रेण तन्त्र के चतुर्णाश साह, यह महाबाद के भार्द जीवन मित्र राक्षस, योग्य के कवः भाई सीनी, अहमदाबाद के श्री ज्ञानी भाई, जाबाद के सूत्रेण कुमार बनशी, नेपाल के मन्त्र कुमार घोंघरी आदि जिस मनोयोग से पत्रिका प्रसार के लिए कार्य कर रहे हैं, वह अपने प्रायः में सहायनीय है, बड़ोड़ा के प्रदीप जोशी, हरी राम जोशी, आदि का सहयोग भी हमें निरन्तर मिलता रहा है, पत्रिका परिवार की तरफ से हम इन सभी गुरु भाइयों को धन्यवाद देते हैं कि जो निष्ठापूर्वक सततः अपने कार्य में लगे हुए हैं और निरन्तर अपने-अपने क्षेत्र में कार्य संचालित हैं, रोहतक के चन्दा सिंह पहल, श्री राधेबक यावत कोइला के रघु, आदि का सेवा कार्य भी अपने प्रायः में सहायनीय है, पिछले तारे सभारोहों में इन लोगों ने जितने मनोयोग से कार्य किया है, वह सहायनीय है ।



कृपया धनराशि भेजें
धनराशि भेजें
धनराशि भेजें
धनराशि भेजें
धनराशि भेजें

कृपया धनराशि भेजें
धनराशि भेजें

पूजक सम्बन्ध

पिछले तारे की
धनराशि भेजें
धनराशि भेजें
धनराशि भेजें
धनराशि भेजें

५- जालंधर

धनराशि भेजें
धनराशि भेजें
धनराशि भेजें
धनराशि भेजें

३- उडुपान

धनराशि भेजें

देव,
ब्रह्मा
क्तियों
में
के

कुण्डल
है

है,
कर

आई
मदा-
नती,
योग
अपने
राम
लता
पुष्प
लतः
अपने
हल,
लेवा
सारे
किना

कुण्डलिनी यों जगती है

कुण्डलिनी अष्टास्र साधना का प्रमुख अंग रहा है, जगत्पति मन्त्री प्रसार की योग साधनाओं की यह मूलाधार है, पदचक्र भेदन कर सहकार का प्रभुत्व प्राप्त करने में ही शक्ति प्राप्त होती है, जो व्यक्ति प्रयत्न कर अपने जीवन में कुण्डलिनी को जाग्रत कर सहकार प्राप्त कर लेता है, पद चक्रों में सर्वश्रेष्ठ और पूर्ण सिद्ध बन जाता है।

कुण्डलिनी के लिए दो चीज महत्वपूर्ण आवे हैं, जिनको समयक लेना आवश्यक है—

मूल बन्ध (वज्रासन)

चित्रलिपियों की आँखों से सटा कर पावनी शारे, वीरों के दोनों तलवे टेढ़े कर दण्डे साधार चक्र के नीचे जमा कर स्थिर कर दें, बाँवें पैर के नीचे रखते हुए, सीधे तलवे दूसरे तलवे पैर पर बायाँ पैर ठीक प्रकार से बैठ जायेगा इसी को मूल बन्ध या वज्रासन कहते हैं।

५- जालंधर बन्ध

अपने गले के नीचे के गूदे में दूधो घटका दें यह पर दृढ़ता से दूधो को लटाने में छाती को दबाये रखनी है, और इसके कण्ड मणि दिखाई नहीं देती, यही जालंधर बन्ध है।

३- उडुपान बन्ध

पेट की पिचका कर पीठ से लगाये तब शिखर हथान

के किनारे और मांस के नीचे वह पृथ्वी तथा जल वायु की एक दूसरे से मिलती है, इसी समय वज्रासन की ऊष्णता से कुण्डलिनी शक्ति जागृत होती है।

जब कुण्डलिनी शक्ति जागती है तब घे वेम के साथ भटका दे कर ऊपर की ओर मुह के नली हैं, इसको देखकर ऐसा लगता है, कि जैसे वह बहुत दिना की धुँकी हो और इसके सारा शरीर जंतव्य हो जाता है।

कुण्डलिनी साधना

- १- प्रति चित्र चार बजे उठकर सासन पर बैठ जाय।
- २- भविका, प्राणायाम दोनों प्रकार के—प्राण से उचित प्राणायाम।
- ३- शक्ति चालती मुद्रा दोनों प्रकार की—प्रत्येक पांच से दस तक
- ४- साइन मुद्रा चारों प्राणायाम में एक चक्र
- ५- परिहान मुक्ति चालन चारों प्राणायाम में एक ही प्राण तक।
- ६- बाकी समय में पटचक्र भेदन की प्राथमिक क्रियाएं

सायंकालीन कार्यक्रम

सायंकाल भावन से पूर्व कुछ क्रियाओं का अभ्यास करें।

- १- महामुद्रा—प्रत्येक पैर पर पाँच से पञ्चवीस तक
- २- महाबन्ध—प्रत्येक पैर पर पाँच से पञ्चवीस तक
- ३- महाविद्य—दोनों प्रकार के—पाँच से दस तक

५. विमुक्त-पंचम चक्र

चक्राङ्कन पदम के ऊपर कण्ड देह में पुत्र वर्ण पीडित
कभी कभी विमुक्त नाम कमल के दक्षीं पर 'य' ने लेबर
के चोपम स्वर रक्तवर्ण मय दिखाई देने हैं, इसका
अर्थ विमुक्त चक्र इंगलिय पड़ा कि यहाँ यहाँ पर जेय
कमल गुड़ना यो प्राप्त करती है।

इसकी गाँ किनी है, इस दल पर मर्द नारी-
अथ वनवाल निव स्वयं विराजमान है, इसने मिड
कमल पर साहक शिवालयदर्शी, लोभों का कल्याण करने
कला, रोम और शोर ने रहित चिरजीवी बनता है।

६. आजा - षट चक्र

तातु घोर - षट से दोनों ओरों के बीच में चक्रमा
क समान रक्तवर्ण का आजा नामक चक्र है, इसके दो
ऊप है, जिनमें 'ह' और 'ख' से दो अर्थ हैं, इस चक्र
पर कुण्डल स्वयं गुड ब्रह्म ज्ञान मुक्त स्थापित होते हैं,

इसकी सिद्ध करने वाला साहक परकाय प्रवेश करने
वाला मर्द, सचं दर्शी, परोपकारी परमसिद्धि सम्पन्न
कीर्तन तथा सिद्ध योगी होता है।

कुण्डलिनी क्रम

पुरुश्चरण

इष्ट देवता-भक्त्या-गुण-कुण्डलिनी-श्रीमयर्षे समुत्पन्न
कुन-कुण्डलिनी मन्त्रस्य पुरुश्चरणमहं करिष्ये।

महा पर इष्ट देवता शत्रु के ह्वाला पर अपने इष्ट का
उच्चारण करना चाहिए।

विनियोग

ॐ यस्य सयं-सिद्धिद-श्रीकुण्डलिनो-महा-मन्त्रस्य
अवबान श्री (ब्रह्मचाली अग्निः, शिव महाशक्ति-श्री

कुण्डलिनी देवता, त्रिष्टुप् छन्द, माया (ह्रीं) बीज,
सिद्धिः शक्तिः, प्रणव (ॐ) कीलक, चतुर्दश-तपे विनि-
योगः।

ऋष्यादि-न्यास

श्रीमहाकाल-ऋषये नमः शिरशि।

विरव-व्यापिनो-पट्टा-शक्ति-श्रीकुण्डलिनी-देवताये

नमः हृदि

त्रिष्टुप्-छन्दसे नमः मुखे।

माया-बीजाय नमः शिरो

सिद्धि-शक्तये नमः नाभौ

प्रणव-कीलकाय नमः पादयोः।

चतुर्वर्ग-प्राप्तये जपे विनियोगाय नमः सगवो

पठन-न्यास

कर-न्यास

ह्रीं

अंगुष्ठाभ्यां नमः

ह्रीं

तर्जनीभ्यां स्वाहा

ह्रूं

मध्यमाभ्यां वषट्

ह्रूं

अनामिकाभ्यां हुं

ह्रीं

कनिष्ठिकाभ्यां बोषट्

ह्रूं

करतल-करगुष्ठाभ्यां फट्

अंग-न्यास

हृदयाय नमः

शिरसे स्वाहा

शिखायै वषट्

कवचाय हुं

नेत्र-त्रयाय वीषट्

अस्त्राय फट्

❀ महादेव्यै नमोस्तुते ❀

‘मां’ केतो सभी दिन महत्वपूर्ण होते हैं, इस हेतु प्रत्येक दिन अपने आपमें अत्यधिक महत्वपूर्ण माने जाते हैं। ‘भगवती दुर्गा’ से संबंधित अनुष्ठान या मन्त्र जब सम्पन्न किया जाय तो निश्चय ही कार्य सिद्धि होती ही है।

प्रस्तुत लेख में उन गौणभौय विधियों का पहली बार स्पष्टीकरण किया जा रहा है जिसके माध्यम से साधक प्रयोग कर मनोवांछित सफलता प्राप्त कर सकता है।

काशियुग में गंगल और दुर्गा सम्पत्ता ही महत्वपूर्ण मानी गयी है और यदि सही प्रकार से इन से संबंधित अनुष्ठान सम्पन्न किये जाय तो निश्चय ही गुरुरत कार्य सिद्धि होती है।

महायोगी स्वामी चंटीदास जी भगवती दुर्गा के अनन्य उपासक हैं, और मां जगदम्बा उनके सामने प्रत्यक्ष उपस्थित हो कर श्रोत्रन ग्रहण करती हैं। मुझे इस महापुरुष से मिलने का बौद्धान्य प्राप्त हुआ था और मेरे विज्ञान करने पर उन्होंने भगवती दुर्गा से संबंधित कुछ गौणभौय रहस्य स्पष्ट किये थे जिसके माध्यम से वर्तमान में दुखी एवं संतप्त मानव अपनी समस्याओं से मुक्ति पाकर पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है।

उनके अनुसार चैन तबरात्रि के प्रारम्भ से आरम्भ

प्रारम्भ तक का पूरा समय ‘शिवसार्त्तक’ समय कहा जाता है। जिसका एक और भगवती दुर्गा से संबंधित है तो दूसरा और शिव से। शिव और शक्ति को परस्पर अन्त्योन्माध्यम संबंध है इसलिए शैव से लगन कर आशुष पूर्णिमा के बीच कभी भी इन प्रयोगों को सम्पन्न किया जा सकता है।

इन प्रयोगों के लिए पांच साधनानिर्वां घोषित हैं—

- १— इनमें से किसी भी साधन में सदा लग्न मन्त्र जब होना आवश्यक है।
- २— दिनों की संख्या निर्धारित नहीं है पर फिर भी यदि यह संभव जाय या अनुष्ठान ११ या २१ दिनों में सम्पन्न हो जाय तो ज्यादा उचित रहता है।
- ३— साधना काल में ग्रहचर्य व्रत का पूर्ण पालन कर और रात्रि को ही मग्न जाय सम्पन्न करें।
- ४— मन्त्र जब के समय प्रीती पहिने, जो का दीपक

सर्वांगे और संबन्धित यंत्र सामने रख कर उसकी तथक दृष्टि रखता हुआ, स्पष्टिक माना से मन्त्र जप सम्पन्न करें।

१- साधना काय में एक समग्र भोजन करें।

उपरोक्त सभी नियम सामान्य हैं, और साधारण से सामान्य स्थिति भी संबंधित साधना सम्पन्न कर आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त कर सकता है। इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी सम्पन्न कर सकता है, रजस्वला समय में पांच दिनों तक निश्चया सावना या मन्त्र जप सम्पन्न न करें, इसके बाद पुनः मन्त्र जप प्रारम्भ कर सकती है। इससे धनुष्ठाण अर्वाह स्थिति नहीं होती।

समस्त प्रकार की कार्य की सिद्धि के लिए

अपने सामने 'कार्य सिद्धि यन्त्र' तथा मिहवाहिनी दुर्गा विग्रह (मंत्र सिद्धि) स्थापित कर स्पष्टिक माना से निम्न मन्त्र का जप करें, और प्यारह धबवा इक्कीस पित्तों में तथा लाख मन्त्र जप करने पर मनोवांछित कार्य में निश्चय हो सिद्धि प्राप्त होती है। सवा लाख मन्त्र जप करने से बाद उस मन्त्र को अपनी मुँजा पर बांध ले तो निश्चय हो मन में चाही हुई कार्य सिद्धि हो जाती है।

मन्त्र

ॐ जातवेद से मुनयाम सोममरातीययो निवहानि वेदः।

सनः वर्षेदति दुर्गाणि विश्वानाथेव सिन्धुदुरीता स्थानिनः॥

२ अकाल मृत्यु निवारण के लिए

अपने सामने 'मृत्युनिवारण यंत्र' स्थापन कर उसको धरावर रखते हुए, निम्न मन्त्र का सवा लाख जप करने पर अकाल मृत्यु या मृत्यु सब समाप्त हो जाता है और यदि मरणासन्न स्थिति के लिए भी यह

प्रयोग सम्पन्न किया जाय तो वह पुनः स्वस्थ हो कर उठ खड़ा होता है।

मन्त्र

पूलेन पाहि नो देवि पाहि सङ्गेन चाम्बिके
घण्टास्त्रनेन नः पाहि चापश्यामि स्वनेन च॥

मन्त्र जप करने करने के बाद संबंधित पत्र मरणा-सन्न रोगी की या व्यक्ति को पहिना दिया जाय तो निश्चय ही उसका मृत्यु भय समाप्त हो जाता है।

३- प्रत्येक साधना में पूर्ण सफलता प्राप्ति के लिए

यदि साधना में बार-बार असफलता प्राप्त हो रही हो और बाधाएँ आ रही हों तो साधना से पूर्ण भगवतो दुर्गा में अनुमति माय कर निम्न मन्त्र का सवा लाख जप 'साधना सिद्धि यन्त्र' के सामने सम्पन्न कर उस यंत्र को अपनी मुँजा पर बांध ले और फिर साधना करें तो उसे निश्चय ही साधना में सफलता प्राप्त होती है और वह सिद्धि होने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है—

मन्त्र

अरुणामतीना तं परित्राण परायणे
सर्वस्यातिहरे देवि नारायणि नमो स्तु ते॥

४- निर्विघ्नता से कार्य सिद्धि के लिए

मात्री, विवाह, व्यापार या कोई भी कार्य निर्विघ्न सम्पन्न हो जाय इसके लिए उस कार्य के प्रारम्भ से पूर्व यदि निम्न मन्त्र के सवा लाख मन्त्र जप 'कार्य सिद्धि यन्त्र' के सामने सम्पन्न कर पर का मुखिया अपने गले में धारण कर कार्य प्रारम्भ करे तो उस कार्य में किसी प्रकार की बाधा नहीं आती और वह कार्य पूर्णता के के साथ सम्पन्न हो जाता है।

मन्त्र

करांतु मा नः शुभहेतुरोपवरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥

५- मनचाहा पति प्राप्ति के लिए

बड़े कारणों से यदि लड़की का विवाह नहीं हो सके हो या मर्यादा, शादी के बाधाएं आ रही हों अथवा सम्बन्धित पति प्राप्त नहीं हो रहा हो तो निम्न मंत्र का मन्त्र जब "काश्चैव यन्त्र" के सामने सम्पन्न कर उस वक्त की हल्का घले में धारण करें तो कुछ ही दिनों में उनके मन का पति प्राप्त हो जाता है उनकी तरफ से स्वीकृति मिल जाती है और बीच ही कार्य सिद्धि हो जाती है ।

मन्त्र

एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरयः क्षत्रियर्षभः
सूर्याञ्जन्म समासाद्य सावणिर्भविता मनुः ॥

६- समस्त प्रकार के शत्रुओं को समाप्त करने के लिए

यदि शत्रु बड़े हों और आर्यों का खतरा हो अथवा व्यापार में बाधाएं पड़ना रहे हो तो अपने सामने 'सर्वहनन्मन्त्र यन्त्र' रख कर इस पर मज्जर रखते हुए निम्न मन्त्र का अनुष्ठान करें तो निश्चय ही कार्य सिद्धि होती है और शत्रु समाप्त हो जाते हैं—

मन्त्र

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रेलोक्यस्यास्तिस्वरि
एवंमेव त्वया कार्यमसिद्धिं रविनाम्नम् ॥

यन्त्र जब के बाद संबंधित यन्त्र मन्त्रधार के दिन शस्त्रांत में जाकर फेंक देना चाहिए या जंगल में जा कर जमीन में बाढ़ देना चाहिए तो निश्चय ही वह शत्रुदलों से सफलता तथा शत्रुओं पर पूर्ण विजय प्राप्त करने में

सफल हो पाता है ।

समस्त प्रकार के रोग शान्ति के लिए

यदि घर में रोग हो या कोई न कोई रोगी बना रहता हो, अथवा किसी पारिवारिक व्यक्ति को ऐसा रोग हो गया हो कि बहुत समाप्त ही नहीं हो रहा हो तो "रोग मुक्ति यन्त्र" सामने रख कर निम्न मन्त्र का जब अनुष्ठान के रूप में किया जाय तो निश्चय ही वह रोग मुक्त हो जाता है ।

मन्त्र

रोगान्शेषानपहंसि कुट्टा
रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्
लामाश्रितानां न विपन्नाराणाम्
स्वामाश्रिता ह्याश्वयतां प्रयन्ति ॥

अनुष्ठान समाप्त होने के बाद वह यन्त्र या तो रोगी के घरे में पहिना दे या घर में ही किसी स्थान पर टांग दे तो घर से रोग गायब हो जाते हैं और व्यक्ति निरोग हो कर जीवन में पूर्ण सुख एवं आनन्द प्राप्त करने में सफल हो पाता है ।

ऊपर मैंने भगवती दुर्गा से संबंधित कुछ मूल्यपूर्ण प्रयोग दिये हैं इनमें से प्रत्येक अनुष्ठान में तथा साथ जब करना चाहिए, किसी भी प्रकार की दोषों पहिनी जा सकती है, सामने शुद्ध ची का दोषक व अगरवती लगी रहनी चाहिए, आसन पीले रंग का सूती होना चाहिए, तथा एक समय भोजन में कुछ भी ग्रहण कर सकता है, इस प्रकार नियमपूर्वक अनुष्ठान करने से निश्चय ही कार्य सिद्धि होती है ।

यन्त्र-मन्त्र मित्र प्राप्त प्रतिष्ठा युक्त दुर्गा प्रर्वचन सम्पू-
टित होने चाहिए और इस प्रकार के प्रत्येक यन्त्र पर
व्यय मात्र ३००० प्राण है, प्रथम धनराशि भेजकर
संबंधित यन्त्र प्राप्त कर अनुष्ठान सम्पन्न कर सकते हैं ।

—*—

“निश्चित सिद्धिदायक प्रयोग”

पत्रिका के इस अंक में यह एक महत्वपूर्ण प्रयोग दिया जा रहा है, आपमें से प्रत्येक पत्रिका पाठक या साधक इसका प्रयोग करे। आप पायेंगे कि इसका प्रभाव तुरन्त एवं अनुकूल होता है। पिछले तीस वर्षों से मैं और मेरे शिष्य इन प्रयोगों का काम उठाते आये हैं, और एक बार भी इनका प्रभाव व्यर्थ नहीं गया।

एक महत्वपूर्ण लेख पत्रिका पाठकों के लिए, जिन्हें करने से कोई हानि नहीं होती अपितु जन साधारण में लोकप्रियता प्राप्त होती है, और तत्पश्चात् उनके कष्टों का शमन होता है।

आप खुद ही इन प्रयोगों को आजमा कर देख लीजिये न।

व्यापार में वृद्धि के लिए

दुकान पर साकर गद्दी पर बैठने के बाद दैनिक कार्य क्रम प्रारम्भ करने से पूर्व निम्न मंत्र का एक सौ अष्ट बार उच्चारण कर दिया जाय तो उस दिन व्यापार में तो वृद्धि होगी ही है, किसी भी प्रकार की हानि से भी सुरक्षा मिलती है।

मन्त्र

श्रीगुरुते महा-गुरुते कमल-दल-निवासे श्री महालक्ष्म्ये नमो नमः सक्षमी भाई सख की सवाई धाबो भाई करो सलाई, न करो तो सात समुद्र की दुहाई रुद्धि-सिद्धि लावोगी तो तो नाथ बौरासो की दुहाई।

इस प्रकार मन्त्र प्रयोग में तो किसी प्रकार से मंत्र सिद्धि की आवश्यकता होती है न दीपक, अमरवत्तो या अन्य विधि विधान की केवल मात्र मन्त्र उच्चारण करना ही पर्याप्त होता है।

बुद्धि बढ़ाने व परीक्षा में निश्चित पास होने के लिए

निरप्य प्रातःकाल उठकर स्नान कर, सरस्वती के चित्र के सामने इसको बार इस स्तोत्र (मन्त्र) का पाठ करने से मन्त्र बुद्धि बालकों की बुद्धि तो बढ़ती ही है, परीक्षा में भी अच्छे स्तर से सफलता मिलती है, इन्टरम्यु में अनुकूलता प्राप्त होती है और निष्णात से संबंधित सभी कार्यों में उत्पत्ति होती है।

मन्त्र

श्वेत-चन्द्रमाला देवी श्वेत-पुष्पोपशोभिता
श्वेताम्बर-धरा नित्या श्वेत-गन्धानुलेपना ।
श्वेताक्ष-मूत्र-हस्ता च श्वेत-चन्दन-चर्चिता
श्वेत-वीणा-धरा शुभ्रा श्वेतालङ्कार-सुषिता
श्रद्धिता सिद्ध-गन्धर्वचरिता मुर-व्रतवै
पूजिता मुनिभिः सर्वैश्च विभिः स्तुयते सदा
स्वाश्रयान्तेषां देवी जयद्वारी सरस्वतीम्
ये स्मरन्ति विसन्ध्यायां सर्व-विद्यां लभन्ति ते ।

ओदाधि लेने का मन्त्र

किसी भी प्रकार की ओपधि लेने से पूर्व यदि इस मन्त्र का पांच बार बार उच्चारण करें और फिर ओपधि ग्रहण करें, तो ओपधि का प्रभाव दुरुस्त होता है, कष्टरहित होता है, और तुरन्त शोभायी समाप्त होती है।

मन्त्र

ॐ श्री ह्रीं वं धमतेष्वरि । एहि एहि मम
शकल सिद्धि कुरु हूं फट्

श्वर निवारण के लिए

छोटा-मोटा मुखार हर घर में धाला ही रहता है, जो इससे किसी अनराशि की ओपधियां तो लेनी ही पड़ती है, साथ ही साथ काफी कमजोरी भी पैदा होती है वही नहीं ध्यातु इस प्रकार की ओपधि लेने से खराबी बिनी वाद बुझार समाप्त होता है।

पर निम्नलिखित मन्त्र से सप्त दाने सरसों के लेकर मान बार यह मान बढ़कर के दाने रोपी बार घुमावे और उसके शरीर पर ही फेंक दें, इस प्रकार सात-बार प्रयोग करें।

केवल एक दिन ऐसा प्रयोग करने से ही निश्चित रूप से मुखार सफाई हो जाता है।

मन्त्र

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः क्रोधेश्वराय नमो
उद्योतिः पयाद नमो नमः सिद्धि रुद्र शत्रोपयनि
स्वाहा ।

कालव में ही यह प्रयोग अव्यक्तिक प्रयुक्त एवं प्रुदायक है।

क्रोध नाश के लिए

कई व्यक्तियों को छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा धा जाता है, इसके उनकी स्वयं की ही हानि होती है, ऐसे व्यक्ति बार में पछुताने ही है, परन्तु उस समय के धनने मांस में नहीं रहने और क्रोध उन पर हावी हो जाता है।

इस क्रोध की धरिरेकता से घर में अशांति, कलह, मित्रों में विरोध और स्वयं के शरीर की हानि होती है।

प्रान्तात् निम्नमन्त्र का मान दसवीं बार उच्चारण कर तीन बार पानी में छुलका कर, साहर जाके तो दिन भर क्रोध नियन्त्रण रहता है, और होने वाली हानि से बचाव हो जाता है।

मन्त्र

ॐ शान्ते प्रशान्ते सर्व-शत्रोपशमति स्वाहा

बस्तुतः प्रत्येक पुरुष या स्त्री को मात्र पांच मिनट का यह प्रयोग तो प्रुबल उठ कर ही लेना चाहिए।

अशुभ स्वप्न के प्रभाव का नाश

कई बार रात्रि को अशुभ स्वप्न धाने से व्यक्ति

दिन भर चिन्तित बना रहता है, मन में चिन्तना रहती है, और दूसरे ने बराबर आशंका बर्ती रहती है, कि कहीं यह असुख स्वरूप सत्य न हो अपर ।

इसके लिए जब रात्रि को ऐसा स्वप्न घाये, तो सुबह उठकर स्नान कर घासन पर बैठकर इतनीस धार इस मन्त्र का उच्चारण कर लिया जाय तो असुख स्वप्न का नाश हो जाता है, और उसका कोई विपरीत स्वरूप भोगना नहीं पड़ता ।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं ब्रह्मां हुमन्ति-नामिन्म महा-मायायै स्वाहा

वस्तुतः इन पन्जार का प्रयोग कर, लेना चाहिए किमते कि दिन भर घासन से व्यतीत हो ।

समस्त प्रकार के संकल के लिए

मेरे कहने से संकलों साधकों ने इस प्रयोग को यादमाया है, और उन्हें निश्चय सफलता प्राप्त हुई है, निश्चय वाच माता मन्त्र जब शावाकाल निम्न मन्त्र का करे तो उसका दिन भर घासन से व्यतीत होता है, सभी प्रकार से संकल बना रहता है, और जीवन में उस दिन किसी प्रकार की असुख कठिनाई नहीं आती ।

इसमें किसी भीप्रकार की मल्ला वा प्रयोग निम्न वा सकता है, दिना, वा न, पूष, बीष यादि के संकल की कोई आवश्यकता नहीं है ।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं फट्

घन वृद्धि के लिये

निम्न प्रातःकाल उठकर निम्न मन्त्र की तोष वाता मन्त्र जब करे और बाद में अपने कार्य वा व्यापार के

लिए जाये तो कुछ ही दिनों में आश्वयंजनक रूप से घन को वृद्धि होने लगती है, एका हुआ वा कंठा हुआ नशा घाने लगता है, और बहुज्वाला सुधमन हो जाता है ।

मन्त्र

ॐ अथ कुबेराय नेत्रवशाथ धन-आभ्यादि पतये वन-आभ्य-ससृष्टि मे देहि दापय स्वाहा

इस मन्त्र जब मैं भी घासन, प्रारवली, दीपक वा मासा का कोई संकल नहीं है ।

स्वप्न से प्रश्न का उत्तर जानने के लिए

निश्चय प्रतिविन के जीवन में ऐसे कई प्रश्न उपस्थित होते हैं, जिनका तत्काल निर्णय लेना कठिन होता है, ऐसी स्थिति में साधक प्रावि को स्नान कर प्रश्न को एक कागज पर लिख कर स्वप्नवशीर देवी का ध्यान कर वह प्रश्न लिखा हुआ कागज अपने निद्राह्ने तकिये के नीचे रख दे और सो जाय ।

उसी रात्रि को स्वप्नवशीर देवी उसे स्वप्न में व्यवस्थ ही दर्शन देती है, और उसके उम जटिन प्रश्न का उत्तर समझान कर देती है, और वह समाधान घाने घाने वाले समय में निष्कुल अनुकुल निद्रा होता है ।

मन्त्र

ॐ ह्रीं मानसे स्वप्नवशीर विचार्ये विधे वद वद स्वाहा

इस प्रयोग को कई लोगों ने संकलों शर घाजमावा है और हमेशा इसका निर्णय सही और प्रामाणिक रहा है, इसके लिए भी किसी भी प्रकार की साधना वा मन्त्र अभ्यर्थों की आवश्यकता नहीं है ।

संकट निवारण के लिए

जीवन में आकस्मिक संकट, राज्य भय, वा बीमारी,

कीन कटिनाई बनाते हो रहते हैं, ऐसी स्थिति में प्रत्यक्ष से सम्बन्ध प्राप्त हो बिभक्त हो जाता है, इसी स्थिति में यह प्रयोग उसके लिए अत्यधिक अनुकूल है।

सम्पन्नवार को रक्त चन्दन की बनी हुई हनुमान् की मूर्ति को अपने सामने स्थापित करें, लाल रंग के कपड़ों पर मूर्ति को रखें, लुट भी स्नात कर लाल वस्त्र पहना करें, मूर्ति के तिनदूर लगावे और मुह को शीघ्र सम्पन्न करि मूर्ति की माना से स्मारक मासा सम्पन्न जप करें।

मन्त्र

ॐ नमो हनुमन्ताय श्रावेणाय श्रावेणाय स्वाहा

इस प्रकार प्रति दिन करें, मूर्ति के सामने जो भोग लगावे चौबीस पक्षा पढ़ा रहे, दूसरे दिन नया शीघ्र सम्पन्न लवण उस भोग को ढिली धर्मन में रख दें, इस प्रकार स्मारक दिन तक करें।

बारहवें दिन शनुष्ठान पूरा हो जाने पर यह सारा प्रयोग करीब श्राद्धो में बाट दें ऐसा करने से स्मारक दिन क मोतर-मोतर सकट निवारण हो जाता है, और श्राद्ध सम्पन्नार्थ में मुक्त हो कर पूर्ण अनुकूलता प्राप्त करने में समर्थ होता है।

सौत्र विवाह के लिए

रविवार के सुबारी कम्पा भगवती दुर्गा (कात्यायनी) का पुजन कर उसके सामने ह्रीं स्मारक मासा सम्पन्न जप विष्णु मन्त्र की करें।

मन्त्र

कात्यायनि महा-माये महा-योगिन्यबोश्वरि योग्य धर्म देहि पति मे कुरुते नमः

सात बारह दिन तक इसको करने से निश्चय ही

विवाह की बात-बौत चलने लगती है और उसका सौख्य विवाह हो जाता है।

यह प्रयोग श्राद्धमासा हुआ है, जित कम्पाओं का विवाह नहीं हो रहा हो, उन्हें यह प्रयोग करना चाहिए।

यदि उस कम्पा को किसी निश्चित पति की प्राप्ति के लिए ही प्रयोग करना है तो याकी विवाह तो बड़ी है पर उरोक्त मन्त्र के स्थान पर निम्न मन्त्र का जप करें—

मन्त्र

कात्यायनि महामाये महायोगिन्यबोश्वरि शमुक-मुतं प्रमुकं देवि पति मे कुरुते नमः

इसमें "शमुक मुत" में होने वाले पति के पिता का नाम ले "प्रमुक" के स्थान पर होने वाले पति के नाम का उच्चारण करें।

ऐसा करने पर प्रत्यक्ष ही उसे सफलता प्राप्त होती है।

समस्त इच्छाओं की पूर्ति हेतु

यदि तब सुबह और सायं निम्न मन्त्र का स्मारक बार उच्चारण करें तो उसके बारे काम स्वतः होते रहने हैं—

मन्त्र

शायी दुर्गा वेद-गर्भा शम्भिका भद्र-कात्यपी भद्रा लोमा लोम-करी नैक-बाहुनैमाणि ताम्

तत्पुतः ये सभी प्रयोग विष्णु में सत्य है, पर इनका प्रयोग और प्रभाव प्रबल होता है, तथा इसमें पूर्ण सुख, एव सौभाग्य की प्राप्ति होती है।



★ यह जीवन ज्ञान यज्ञ शाला है ★

कुछ लोगों में संस्कार से ज्यादा जीवद शक्ति होती है, और उसके सहारे अपने जीवन में वास्तविक लक्ष्य को प्राप्त कर ही लेते हैं, और ऐसे व्यक्ति की वक्ष्मा कर सकते हैं, जो कुण्डलिनी जागरण साधना के लिए २२ बार प्रयत्न किया, और प्रत्येक प्रयत्न असफल रहा। उसकी उम्र ७० साल की थी, दुबला पतला शरीर, घसी हुई आँखें, पके हुए दाँत और घाल में क्लिप्त लक्ष्मण-हट।

पर फिर भी उसके मन की एक मान आकांक्षा और इच्छा यही थी, कि एक बार जीवन के धार्मिक चक्रों को जगृत किया जाए और पूर्ण कुण्डलिनी जागरण कर इष्ट से सालाकार कर लिया जाए, बड़ीदा के प्रनुवास भाई ऐमें ही जोबद के व्यक्ति रहें हैं, पूरा घर उनका बिरोधी हो गया, घर वाले उसे सनको समझने लगे और पुत्रों से क्षयधिक मतभेद बन गया, वे सभी चाहते थे, कि जब चिन्दनी के बर्ष बहुत कम बच गये हैं, फिर घन दत्त उन्न में कुण्डलिनी जागरण या घग्ग साधनाएं करने से क्या लाभ ?

परन्तु प्रभुदास भाई में धार्मिक उर्जा प्रवाह था, वह उन शक्तियों में से नहीं था, जो हिम्मत हार कर बैठ जाय, उसने बराबर प्रयत्न बाजु रखा, पदार्पण का कटोर दासवास किया तैति कियाएं सम्पन्न की और मूलाधार से लगाकर आला तक तक जागृत करने के प्रति बराबर संवैष्ट बने रहे, और दाखिर २३वीं बार कुण्डलिनी जागरण में पूर्ण सफल हो गये।

और इसकी आश्चर्यजनक परिणती हुई, पके हुए सफेद दाँत दागिन काले होते गये, बँरो का लगहापन जाता रहा, स्मरण शक्ति बढ़ गये, येहरे की चमक और आँखों की लपक में अत्यधिक वृद्धि हो गई और ऐसा लगने लगा कि प्रनुदास भाई पुनः जवानी की ओर लौटने लगे हैं, ७० साल के बूढ़ ने अपने कर्म के माध्यम से युवकों की ओर माधको को प्रार्थानिक रूप से यह शिक्षा दे दी कि यदि व्यक्ति निश्चय कर ले तो प्रभव्य ही अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त करता ही है।

और चिन्दनी का बाधा सकर पुरा करने से पहले ही चुक जाते हैं; उनके लिए तो कुल भी बहना अवश्य है, उनके मन में हुआ और निराशा पर पर जाती है कि अब हम जीवन में कुछ भी नहीं कर पायेंगे बार-बार उनके मन पर यही चोट पड़ती रहती है, कि जब तो हम मृत्यु के निकट हैं ज्यादा से ज्यादा दो-चार साल और भी लेंगे, फिर ये सब खट-पट करने की क्या जरूरत और जब इस उन्न में साधना करने से होगा भी क्या। और ऐसे व्यक्ति अपने जीवन का मूल्य ही नुस्ताने बैठते हैं, उनको इस बात का यहसात ही नहीं होता कि जीवन की प्राप्ति उन्न बीतने के बाद ही साधना का सही समय प्रारम्भ होता है, जब हम रहनुपी की मपरबाधों से छोड़े बहुत मुक्त होने लगते हैं, अब हम ज्यादा सफेदी तरह से अपने जीवन की समझने लगते हैं, ऐसे समय में ही साधना सम्पन्न की जा सकती है।

और वह मायिक।

मणि बलि से तो प्रत्येक मायिक और गुजरानी काई
रहित है, बटोरा की रहने धामो यह महिला प्रायो
ने अधिक उच्च पार कर चुकी थी, घर में रहितता का
मायिक साया हुआ था, पनि हृदय रोग ने पीड़ित था
और वह कहीं उठने बैठने या आने जाने के लिए
आवश्यक था। लड़की बड़ी हो गयी थी, और उसकी मादी
की विन्या। बराबर मरिा बहुत को आये जा रही थी,
कुछ प्रकार से देखा जाय तो वह बर्त्स, दुःख, संताप और
मायिकानियो ने फिर रही थी।

मणि बलि को उन्नत हो, मई की Ym वर्ष के लगभग,
मणि शरीर जर्जर तथा निद्रालु हो चुका था।
मणि ने इनकी लाकृत ही नहीं रही थी, कि कुछ किया
उसके जीवन के नश्य में ही बुढ़ापा उस पर हावी हो
गया था।

फिर जो उसने हिम्मत नहीं हारी, शरीर में ऊर्जा
का प्रतिरिक्त प्रवाह था जो उसे बराबर जोशत जलित
देता जाता था, और ऐसी स्थिति में उसने तारा
साधना सम्पन्न करने का निश्चय लिया, उसके मन में
वह पुनः विन्यास था कि मैं प्रसन्न हो तारा साधना में
सफलता प्राप्त करूँगी हो।

उसने तारा साधना के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त
की, उसकी मुश्न से हृदय जागकारी और रहस्य की
जात करने का प्रयास किया और वह तारा साधना
सम्पन्न करने के लिए बैठ गई, इससे घर के कामों में
व्यवधान आने लगा, समय पर भोजन नहीं बनता था,
पति की सेवा में भी थोड़ी बहुत मृदुता आने लगी और
घर के सभी सदस्यों को तरक से उस पर प्रहार में होने
लगे घर वह निश्चिन्त थी उसकी आत्मा स्पष्ट रूप से कह
रही थी, कि मैं हर हासत में तारा साधना सम्पन्न
करूँगी हो, और मुझे इसमें सफलता पानी ही है।

वह पांच बार तारा साधना सम्पन्न कर सम्पन्न होने
पर हर बार उसे सफलता ही हाथ लगी, परन्तु जैसा
कि मैंने बताया कुछ लोगों में प्रतिरिक्त ऊर्जा प्रवाह
होता है, मणि बलि में भी इस ऊर्जा का प्रत्यक्ष प्रहार
स्वागत था और उन्नी के बल पर वह बराबर आगे बढ़
रही थी, उसने पूरे घर के बिरोंदा और दवाय के
बाबजूद भी छठी बार तारा साधना सम्पन्न करने का
निश्चय लिया और इस बार पुनः सफलता वा गई।
अन्यथा तारा के उन्ने मायिक वर्णन हुए, और जिस ज्ञान
की वह कल्पना ही नहीं कर पाती वो यह ज्ञान उसके
मानने साकार हो गया।

अगले बार महीनों में उसे गुजरान राज्य की
नौदरी का प्रथम उपकार तो मिला ही, लड़की का
विवाह भी दो महीनों के भीतर-भीतर ही मया, पति का
स्थायी आश्चर्यजनक रूप से मृष्टरत्ने जाता और मणि
बलि का तो जैसे जाया करवा हो गया, उम्मीद ही
नहीं की जा सकती थी कि यह वही मणि बलि है जो
दूखी हुई निद्रालु, बेकस और दुःखी थी, उसके बेहरे पर
एक आश्चर्य सा साक्षर्यण स्वागत हो मया और घर की
वरिष्ठता हेमना हेमना के लिए समाप्त हो गई। उसके
और उसके परिवर्त्तन पर पूरा बड़ोश आश्चर्य
कर रहा था, गुजरान के महामूर्ख समाचार पत्रों में
उसके कोशों और इन्टरव्यू प्रकाशित होने पर इन सब के
मूल में था, साधना के प्रति सक्षर्यण भाव, दृढ़ आस्था
और धनका विन्यास।

हकीमत तो यह है कि नाशान-नवाय की मादृ
नीमने के बाद हम अपनी निश्चितताओं को समाप्त कर
लेते हैं और अपना छोटा सा कार्य कोच बना लेते हैं,
और ऐसे संकीर्ण चरे में हम अपने आपको बांध लेते हैं,
जीवन में किसी प्रकार का कोई उत्साह या उर्मा नहीं
रहती एक तरह से देखा जाय तो हम अपने ही ने में रूढ़
हो कर रह जाते हैं।

यदि आप कुछ करना चाहते हैं तो आपको सावधान

हो जाने की जल्द है। एक जगह ठंडा हुआ पानी गंदवा हो जाता है, और उतमें लडाइ पंथा हो जातो है, मावको निरस्तार परिवर्तन घबनाये रहता है, निरस्तार भागे बहते रहना है, इस क्रम की मन से निकाल कोजिये किन बोध कर सकते हैं, न प्रयोग कर सका है, और न सकलता या सकते हैं।

हो सकता है, आपको पहरे बार दूसरी बार या तीसरी बार अमरुता मिले, ही सकता है, आप पर मुनीयता का पहाड़ टूट पड़े और यह भी हो सकता है, कि चारों तरफ में छासोवनारों की बौखार होने लगे, पर इनके आपको घबराके की जरूरत नहीं है, ऐसे बुरे समय का तो अपने आप ही विशेष मूल्य होना है, और ऐसे में ही मन को बुरे की पहचान होती है, ऐसे समय में तो पतिरिक्त ऊर्जा का प्रयोग करना चाहिए और धर्म बंदरुत पूर्ण सकलता प्राप्त कर लेनी चाहिए।

सफलताएं और असफलताएं

जिस व्यक्ति के जीवन में जीवत शक्ति होती है, वे अपनी प्राप्ति और स्वभाव में सुरम्य परिवर्तन ले आते हैं, विचारों की कंब से अपने आपको मुक्त कर लेते हैं, किसी प्रकार की घड़न उनके लिए बाधक नहीं बनती वे जीवित उठाने के लिए तत्पर रहते हैं, और मान-घबनाम को भी गायीता पूर्वक स्वीकार करते हैं।

यह बात पूरी तरह से समझ लीजिये कि आपके बदलने से आपके कोई बुरा मला नहीं रहेगा, यह बात भी समझ ले कि चाहे आप कुछ भी कर ले, कुछ सांग कभी भी आपने लुप्त नहीं होगे, आपके प्रति कभी भी प्रेम भाव प्रदर्शित नहीं करेंगे, सभी लोग अपने ही चिन्ताओं में ग्रस्त है, उनको इस बात की कोई चिन्ता नहीं है, कि आप क्या कर रहे हैं, और क्या नहीं कर रहे हैं।

ऐसे समय में आपको आश्वोष सोचना चाहिए,

अपने आपसे आत्म वाशकार करना चाहिए, इस बात का चिन्तन करना चाहिए, कि क्या आप सतत बर रहे हैं, कोई नई चीज सीखना सतत नहीं होता इसका कारण यह है, कि आप स्वयं अपने जीवन के प्रति उत्तरदायी हैं, जीवन का अधिक भाग आपने भोगा है, और आपको हम बात का ज्ञान है, कि जीवन में क्या सही है, और क्या सही नहीं है।

जो व्यक्ति विश्वास पर पहुँचना चाहते हैं, वे बराबर प्रयत्नशील बने रहते हैं, हर क्षण वे मुक्त न कुर नवा सीखते ही रहते हैं, उनको अपनी जिन्गी के प्रति चिन्ता-चरपी होती है, जिसके माध्यम से वे जीवन के सचों को प्राप्त कर लेते हैं, जो जीवन का परम ध्यान है, साधना के द्वारा ही व्यक्ति अपने बुद्धि को गोक सकता है, साधना ही जीवन की मृत्यु को घमृत्यु में परिवर्तित कर सकती है, साधना ही जीवन में ध्यान और उर्ध्व प्रदान कर सकती है, साधना के द्वारा ही बोध हुआ जीवन पुनः प्राप्ति किया जा सकता है, और साधना के द्वारा ही जीवन का रस जीवन का धाम्य और जीवन का प्रयोजन प्राप्त किया जा सकता है।

इस समय में अर्थों के प्रसिद्ध लेखक की वंकि याद आ रही है, कि जीवन का धाम्यिक ध्यान ऐसे उद्देश्य के लिए समय को स्वर्गीय करना है, जिसे आप महान समझते हैं, जिसके द्वारा धाम्य और उर्ध्व प्राप्ति की जाती है।

बजाय इसके कि आप अपने ही बरे में बने हुए रहे, अपने ही स्वार्थ में निहरी के लौट बने रहे, इसकी अपेक्षा समाज के लिए देन के लिए और अपने धर्म के लिए आप कुछ ऐसा करें, जो कि आपके जीवन का लक्ष्य हो जिसके माध्यम से आप इस संसार के प्राप्त कर सकें, जिसे जीने वाले व्यक्तियों के द्वारा ही यह संसार धाम्य बन है, और ऐसे व्यक्ति ही अपने जीवन का पूर्ण धाम्य लेते हैं संलग्न हो पाते हैं।

५

★ स्वर्ण सिद्धि ★

कोई कठिन नहीं है स्वर्ण बनाना

होना चाहिये आपको अपने आप पर जोसा और परिश्रम की भावना

कोई भी कार्य असम्भव नहीं होता, यदि लगन से और धैर्य से उस कार्य पर लग जाय तो वह कार्य हो कर ही रहता है, पर हम में मजबूतों का अभाव होता है। हमें प्रलोचना करने की शक्ति पड़ गई है, किसी कार्य को प्रलोचना करना धार्मिक धासान और सरल कार्य है, पर इनमें धार भी मग्न नहीं बनता। देश में और लोग ने ऐसे व्यक्तियों के नाम की गलती भी नहीं होती, क्योंकि तो यह हो कि आप प्रलोचनात्मक भाव को अपने मन में उभारना शुरू करना, एक क्षण के लिए भी बस सोचें कि शायद ऐसा भी हो सकता है, और आप उस पर पुरा प्रयत्न करें, उसके सम्बन्धित जितना भी काजिए है, उड़ जाँऊँ कर पड़ ले, अपने सम्बन्धित कार्य को विवेक है, तो उनके सम्पर्क में जायें, उनके विचारों को और उनसे बहुत शिक्षा प्राप्त करें, दुनिया में कोई भी काम असम्भव नहीं है।

उक्त वचन पहले हिमालय की सर्वोच्च चोटी एवरेस्ट को चढ़ना असम्भव माना जाता था, पर नेर्नसिड ने इसे अपनी हिम्मत के बल पर सम्भव कर दिखाया, उसी प्रकार के धैर्य और धार के जो लोग हैं, वे भी जा सकते हैं, पर एक चीज नहीं दस-दस लोग बहा कर जा पायें हैं, जिससे वेनल को पार करना कठिन-

तम माना जाता था, पर जो पुर के चक्के हैं, उन्होंने दशवर्ष से वेनल को तो तैर कर पार किया ही, दोनों तरफ से भी उनके तैर कर पार कर अपनी अजेयता सिद्ध कर दी, १ व २ नहीं ऐसे बड़े बहादुर हैं, जब सामान्य से लगने वाले प्रादमियों ने असम्भव कार्य संभव कर दिखाये हैं।

इन लोगों ने प्रलोचनाओं में अपना समय बर्बाद नहीं किया, इन लोगों ने ऐसे किसी भी कार्य को असम्भव नहीं माना। ऐसे लोगों ने इस बात को भी बिगना नहीं की कि समाज क्या रहेगा, इन लोगों के मन में तो संसार में अपने नाम का रज्जा बजाना था, और ऐसा उन्होंने कर दिखाया, स्वर्ण बनाना भी ऐसा ही कठिन और असम्भव कार्य लगता है, परन्तु जो मनुष्य है, जो हिम्मतवान है, जो कुछ कर चुनने की क्षमता रखने है, उनके लिए यह असम्भव नहीं, उन्होंने इस चीज में भी पूर्ण सफलता प्राप्त की है, और भौतिक दृष्टि में सभी समस्याओं में मुक्ति पाई है।

जो रसायन शास्त्र के बारे में घड़ी बहुत भी जानकारी रखते हैं, वे इस बात को अच्छी तरह से जानते हैं, कि धातु परिवर्तन कोई असम्भव क्रिया नहीं, आवश्यक

कहा इस बात को है, कि सही तरीके से कार्य सम्पन्न हो
घोर सही मायदानी मिलेगा ।

खिदियों में कार्य

कौमिया धिरी या धातु परिवर्तन के बारे में प्रयत्न
मारत से ही सही खिदियों में भी हो रहे हैं और उन्होंने इनमें
सफलता पाई है, अती-सदी अमेरिका के मिस्टर ब्रू ने
एक क्रिया प्रकाशित की है, जिसका नाम है "लेव्ड इ
गोल्ड" इसने लेव्ड के पारलैप योगियों के साथ अपने
विशेष हुए तीन बच्चों का पुरा-पूरा प्रामाणिक विवरण
दिया है और बताया है, कि स्वर्ण बनाई की ओर में
वह कहा-कहा नहीं भटका और छात्रों में उसे यह
विधा प्राप्त हो रही है ।

इनके बाद ब्रू लगभग छः वर्षों तक उन योगियों
के लोबी हुई, किपाओं पर प्रयत्न करता रहा, कई बार
उसे असफलता मिली, कई बार वह एक धातु को मीने
ओमें रंग में परिवर्तित तो कर देता था, पर खरा सोना
नहीं बनता था, परन्तु उसने हिम्मत नहीं हारी, पुस्तक
में उसकी एक पंक्ति बहुत धक्की है, "यदि मैं सफल हो
गया तो केवल मैं ही असफल होता" पर यदि मैं सफल
हो गया तो पूरे संसार में सेरा हो नहीं मेरे पूरे परिवार
का नाम प्रसिद्ध हो जायेगा, इस उक्ति को उसने हमेशा
अपने सामने रखा और इस क्षेत्र में बराबर प्रयत्न करता
रहा, आज वह अमेरिका का सबसे धनी व्यक्ति है,
एक वर्ष में उसने तीन-तीन बीक स्वापित किये हैं, उसके
सुद के दो हवाई जहाज हैं, और समुद्र के अन्दर एक
कुन्दर टापू को उसने खरीद लिया है ।

यह सब बमकाइ कैसे हो गया उसने अपनी पुस्तक
में स्वीकार किया है, कि यह उन भारतीयों की देन है,
जिनके साथ मुझे घुमने का अवसर मिला, और जिनने
ने इन विद्याओं की सीख सका, आज मैं जो कुछ हूँ, वह
उन स्वर्ण तन्त्र की वजह से ही है ।

और बाकी माध्यम होना कि एक वर्ष में दस

पुस्तक को बारह लाख प्रतियाँ बिक चुकी है, और अठारह
विक्रित कार्यालयों में इस पुस्तक का अनुवाद हो चुका है
पुस्तक में लेखक ने योगियों से प्राप्त उच्चों के ल्यों उदाहर-
रण, मोहों या माध्यम दिये हैं, और उसका सातव्य रूप
भी दिया है, उसने स्वयं इस बात को स्वीकार किया है,
कि ऐसे पद्धत पढ़नी बार में सफलता मिलेगी, यह
कमरी नहीं है, क्योंकि वह पूरा कार्य प्रेषितकन कार्य है,
पुस्तक पढ़ कर कोई व्यक्ति अपना मोक्ष पाये, यह
जल्दी नहीं होता, इसके लिए तो पानी में उतरना ही
होता है, कई बार उनके माक धोरे मुँह में पानी
सकता है, पर सगतीबन्धा वह रोना सोज ही मिला ।

इस पुस्तक में कुछ महत्वपूर्ण योगियों के फोटो
उनका सफ़ल परिवार, विधान स्थान और उनसे प्राप्त
कुटुम्बियों का विवरण दिया है, और बताया है, कि
इस ब्रू उक्तिओं के अनुसार प्रयत्न करने पर धातु परि-
वर्तन सिद्धि प्राप्त हो सकती है, इस प्रक्रिया में न तो
कोई समय लगता है, न कोई खानन प्रायश्चाम । न लक्ष्य
बनाने काई का संकट है, और न पचासत लगा कर
माना करने का विधान, इसमें तो कुछ भौतिक रीति
में रसायनिक क्रिया सम्पन्न करने का विधान है, और
इस विधान में सफलता पाई जा सकती है ।

तो फिर आपमें क्या कमी है

यदि अमेरिका का एक निर्बंध समुदाय, गुमानाग ता
व्यक्ति अपने परिवार और प्रयत्न के बल पर इस विद्या
को प्राप्त कर सफलता पा सकता है, और एक ही क्षण
में समुद्र के प्रसिद्ध शिखर पर पहुँच सकता है, तो फिर
आपमें क्या कमी है, जब एक बाह्य का व्यक्ति भारत-
वर्ष में सटक कर ऐसी कद्दुल आन प्रिया को मीन
सकता है, तो फिर आप भी इतने सफलता पा सकते हैं ।

पर हम लोगों में एक ही बात की कमी है, कि हम
पूरी तरह से अधिष्ठाता व्यक्ति हैं, हमें तो अपना पाप
में ही विश्वास नहीं है, पालोचना हमारा गुण धर्म बन
गया है, हम पणिका की आलोचना कर बैठते हैं, इस में

जो दो चोरी की भी जाननेवाला करने में बाधक कुछ भी
नहीं करेगा है। और ऐसे भी व्यक्ति मिल जायेंगे, जो
उन सब की वर कर प्रविष्टय से मुह विचारा लेते और
उनका प्रयत्न वहीं होता कि ऐसा मोदे ही हो सकना
है। इसकी अपेक्षा यदि हम उन जन्म की प्राप्ति कर उसके
अन्तर्गत प्रविष्टय करे और पूरे समर्पण भाव में कार्य
करना चाहयम करें तो निश्चित सकलता प्राप्त होती ही
है। आचर्यसत्ता रचनार्थक कार्य करने की है। महान
विश्वको होने की है पूरी तरह में प्रविष्टय करने की है।
और जब दो मान या दो - चार महिने पूरी तरह में
प्रविष्टय प्राप्त करे इस क्षेत्र में कार्य सम्पन्न करने की है।
जन्म के गर्भों में यदि किसी बच्चे से इतने कार्य में
अवधान हो गए तो, जन्म में संतोष अवश्य रहेगा कि हमने
जो दिशा में प्रयत्न किया है और यदि सफल हो गये
तो जन्म में सब कुछ प्राप्त हो जायेगा, और आरम्भक
में ही नहीं पूरे विश्व में नाम स्त जायेगा।

इसके लिये हम इससे संबंधित जितना भी साहित्य
प्राप्त हो सके उसकी पढ़ ले कुछ साम भी ले स्पष्ट कर
लेगा है —

स्वर्ण रसायन से संबंधित महत्वपूर्ण ग्रन्थ

- १- श्रुत्येदीक श्री सूक्त
- २- लक्ष्मी तंत्र
- ३- सद्भावयम तन्त्र
- ४- काकचाण्डीश्वरी काव्य तन्त्र
- ५- रस हृदय तन्त्र - (पवित्रपादाचार्यकृत)
- ६- गोरक्षा संहिता - (गोरक्षनाथ रचित)
- ७- रसाध्याय (कालयोगी कृत)
- ८- रस रत्नाकर रसायनखण्ड (निरयनाथ सिद्ध)
- ९- रसरत्नाकर श्रुतिखण्ड वृद्धिखण्ड (")
- १०- रसार्णव (भैरवानन्द योगी कृत)
- ११- ध्यानन्द कन्द (संभार - संरव)
- १२- रस पद्धति - धो विदुनाथ
- १३- रसोपनिषद - राजा मदनमयकृत

- १४- रसेन्द्र चूड़ामणि - सोमदेव
- १५- रस प्रकाश मुचाकर - यमोचर
- १६- रस कौमुदी - ज्ञानचन्द्र
- १७- सिद्ध रसायन - ब० क० सोरे
- १८- वारय-संहिता - सकलित

इसके अलावा भी अनेक तन्त्र में संबंधित साहित्य
प्रकाशित है, और यदि उचित उक्त क्षेत्र में निरूपण ही
कर ले तो वह प्रयत्न कर कुछ अन्य ग्रन्थों की प्रविष्टय
कर सकता है।

इसके अलावा कुछ उच्च श्रेणी के योगी भी दूसरे
पर विन सको हैं, जिन्हें इस विद्या का प्राथमिक ज्ञान
है। और वे सिद्धान्त में भी तत्पर हैं। आबन्धनका है बंध
जैसे समर्पित व्यक्तित्व की, जो पूरा प्रविष्टय कर अपनी
कुल में बद्ध जाता है, और मन्त्र में सफलता प्राप्त कर
ही लेता है।

धातु परिवर्तन - स्वर्ण क्रिया

सूच में अपने स्वयं में स्वर्ण बनाने में संबंधित कई
प्रयोग दिये हैं, जो कि उसे विभिन्न योगियों ने प्राप्त हुए
हैं। ये प्रयोग सामान्य भाषा में और संस्कृत भाषा में हैं
जिसका उसने अर्थजी में सरन धर्म प्रस्तुत किया है।
नोवे में संबंधित कुछ प्रयोग स्पष्ट कर रहा है। जिसके
माध्यम में पाठक इन क्षेत्र में सकलता प्राप्त कर
सकते हैं—

स्वर्ण प्राप्ति - १

रक्तविककमूलं तु कांजिकं शुद्धपारदम्
कंगुखो तेलसंयुक्तं सयं कल्पं मलेपयेत् ।
ताम्रपत्राणि तप्तानि तस्मिन् निक्षेपितवता
एवं त्रिसप्तत्या कुर्वाद् दिव्यं भवति कांचनं ॥

भाषाएं

साल ८ चित्रक की जड़ की लेकर नीचे बोये

में उसकी चोटे और इस प्रकार छः घंटे चोटने के बाद उस रस को छुड़ तबि के टुकड़े पर लेप कर दे, इसके बाद नीला बोधा, सेन्धा मक्क व कुंशुम बराबर मात्रा में लेकर इस ताम्बे के टुकड़े पर छालकर कड़ई में रख दें और इसे बीस किलो पानी में पकावे, जब एक किलो पानी यह आय तो ताम्बे का टुकड़ा निष्कष हो स्वर्ण बन जायेगा।

स्वर्ण प्राप्ति प्रयोग-२

लीरकंदमंत्र धीरे तप्त ताम्र निषेचयेत्
जलवार प्रयत्नेन तत्ताम्र कांचनं भवेत्

भावार्थ

गन्धक, रस चन्दन, और कडवली बराबर मात्रा में लेकर उसमें ताम्बे को जल दें और इस किलो पानी में पकावे जब पानी एक किलो रह जाय तो उस ताम्बे के टुकड़े को बाहर निकाल दें।

इस प्रकार छत बार करें तो वह ताम्बे का टुकड़ा निष्कष ही होने में बदल जाता है।

स्वर्ण प्राप्ति प्रयोग-३

पारदं पलमेकं च हरितालं च तत्समं
गन्धकं च तयोः तुष्यं सर्वनीयं विशेषतः
पूर्ववत् प्रापितं कुर्यादिव्य भवति कांचनं

भावार्थ

एक भाग पारद, एक भाग हरिताल तथा दो भाग

गन्धक लेकर घाक के तृध में दिन बार घर्दन करें, फिर इसे बीस किलो पानी में पकावें, पकाने के बाद इसे बाहर निकाल दें और दो भाग ताम्बे को पानी की तरह पिघला कर इस पर डालें तो यह ताम्बा तुरन्त स्वर्ण में बदल जाता है।

स्वर्ण प्राप्ति प्रयोग-४

तापकस्य त्रयो भागा जिला भागा द्वयं तथा
म्लेच्छभाषा भदेको पारदस्य तथा परः
कुमारो रसयोगेन भर्वायित्वा यथाविधि
दीपाम्नि तत्र कतं व्यो दिव्य रूपं हि कांचनं

भावार्थ

तीन भाग हरिताल, दो भाग मेनसिल तथा एक भाग हितून को एक भाग पारद में चोटे, फिर गंधार पारद के रस में घर्दन कर रात्रि को बीस किलो पानी में ताम्बे के साथ पकावे तो यह ताम्बा निष्कष ही स्वर्ण में बदल जाता है।

इसके अलावा भी प्रचुर ते धर्पतं दम्ब में और भी कई प्रयोग दिये हैं, और उसने दावा किया है, कि इन प्रयोगों के माध्यम से ही उसने स्वर्ण प्राप्ति में सफलता पायी है, आध्यात्मिक प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर भी यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है, कि संस्कृत में दिये गये श्लोक प्रामाणिक हैं, और यदि इनका सहारा लेकर कोई रसायन किया में उतारे तो उसे प्रबन्ध ही सफलता प्राप्त होगी, ऐसा मुझे विश्वास है।



तय

जो साधना के ब

हैं जिनको अपनी
इसमें स्वयं
इसमें स्वयं
इसमें स्वयं
इसमें स्वयं

इसमें स्वयं
इसमें स्वयं
इसमें स्वयं
इसमें स्वयं

इसमें स्वयं
इसमें स्वयं
इसमें स्वयं
इसमें स्वयं

क्या बला है परकाया प्रवेश

क्या ऐसा आज के युग में भी संभव है

जो साक्षना के बारे में थोड़ी बहुत भी जानकारी रखने वाले लोग अपनी प्राचीन विद्याओं पर गर्व दे, वे परकाया प्रवेश शब्द भी और उसके अर्थ को अपनी समझ में लेते हैं, परकाया प्रवेश का तात्पर्य कुछ विशेष प्रकार के करने तरीके को मृतक बना देना और अपने शरीर में प्रवेश करने को निकाल कर दूसरे मृत शरीर में प्रवेश करके उसे जीवन्त बना देना।

साक्षना दर्शन इस बात को स्वीकार करता है, कि परकाया प्रवेश संभव है, और प्राणों का अस्तित्व मृतक शरीर में, इसीलिए कई बार स्वस्थ शरीर को मृतक शरीर में प्रवेश करके निकाल जाते हैं, यदि वेह से प्रवेश होता तो ऐसा संभव नहीं होता।

आज की ही भारतीय दर्शन में 'मन' कहा है, और यह मन एक जगह नहीं रहता है, और हमारा मन बहुत दूर-दूर विचरता रहता है, हम एक क्षण के लिए भी-बिना अमेरिका का विचार करते ही हमारा मन अमेरिका जा पहुँचता है, और यदि वहाँ कोई घर या जगह बना हुआ होता है तो हम 'प्राण' बन्ध कर उस जगह की खुशी देख लेते हैं, यह किया प्राणिक शरीर के साथ संबंधों को तोड़ दे, लोगों की जो कई

बार कहते हुए सुना है, कि हमारे मन पर हमारा नियन्त्रण नहीं है, चाहते हुए भी हम अपने को रोक नहीं पाते। इन तथ्यों से इस बात की पुष्टि होती है, कि वेह से सर्वथा संभव प्राण या मन का अपना शरीर प्रस्थित होता है, और उस पर आपत्तयः हमारा कोई नियन्त्रण नहीं होता।

परन्तु योग साक्षना के पाठ्यक्रम में इस मन पर या प्राणों पर अपना नियन्त्रण स्थापित कर सकते हैं, और जिस प्रकार से भी चाहे, उसका उपयोग कर सकते हैं, जब ऐसा नियन्त्रण स्थापित हो जाता है, तो मन से या प्राणों से जो भी कार्य करने को कहते हैं, कर लेते हैं।

परकाया प्रवेश भी साक्षना का अपने प्राणों पर पूर्णतः नियन्त्रण होता ही है, ऐसा साक्षक अपने प्राणों को आकाश देना है, कि वह अत्युक्त मृत शरीर में जाकर स्थित होना है, और इतनी निश्चित व्यवधि के साथ उस शरीर को छोड़ कर वापिस इसी शरीर में आना है।

शंकराचार्य और परकाया प्रवेश

आज से कुछ ही वर्ष पहले शंकराचार्य ने प्राणा-त्मिक रूप में इस प्रयोग को संभव कर दिखाया था,

राजा की मृत्यु हो जाने पर संकराचार्य ने धपने प्राणों को देह से अलग कर राजा की मृत देह में प्रवेश के लिये था, कल्पवृक्ष मृत राजा कुछ ही मिनटों में जीवित हो उठा और राजा के शरीर में रह कर संकराचार्य ने राज्य कार्य के विभिन्न अनुभवों को तो प्राप्त किया ही, साथ ही इष्टेष जीवन की उन पुस्तियों का भी अनुभव किया जिसके माध्यम से वंश प्रतिष्ठापित होता है या समाप्त उत्पन्न होता है।

इस प्रकार लगभग छः महीने तक संकराचार्य का शरीर मृतवत् पड़ा रहा, और उनके प्राण राजा की मृत देह में रह कर राज्य कार्य करते रहे, इसके बाद निश्चित अवधि बीतने पर उन प्राणों ने स्वामी की देह को छोड़ दिया और वापिस धपने मूल देह में आ गये, और इस प्रकार संकराचार्य की देह छः महीने बाद वापिस जीवित हो कर क्रियाशील हो सकी।

इस घटना से यह भली भाँति स्पष्ट होता है, कि यदि साधक चाहें तो कुछ विशेष पुरस्कारों के माध्यम से धपनी देह से प्राणों को अलग कर किसी मृत शरीर में धपने प्राणों का संभार कर सकता है, इस पूरी प्रक्रिया में पहले वाली देह के अंगूठे में मात्र स्पर्श बना रहता है, जिससे शरीर चेतन्य रहता है, और जब वापिस प्राण उस शरीर में प्रवेश करते हैं, तो वह जिवान् जीव हो कर कार्य करने लगता है।

पिछले कुछ ही वर्षों से इस विद्या का लगभग शोध हा हो गया था, या यों कहा जाय कि बहुत ही कम भारतीय साधक या योगी बचे थे, जिनको इस विद्या की प्रायोगिक जानकारी थी, परन्तु अब यह विद्या कोई गैरभोज्य नहीं रही, योगियों में और इतने संबंधित प्रयोगार्थी ने प्राचीन ग्रन्थों को ढूँढ़ निकाला है, इस साधना का सम्बन्ध अध्ययन किया है और उन विधियों को ढूँढ़ निकाला है जिससे माध्यम से परकाया परिवर्तन किया जा सकता है।

परकाया प्रवेश से संबंधित प्रकाशित साहित्य

- १- मृत्यु विज्ञान (कलकत्ता-होल्कर)
- २- मृत्यु विज्ञान और परम पद (वीरनाथद्वैत)
- ३- देह शून्य (मन्थान श्रुति कुल)
- ४- योग और परकाया प्रवेश (स्वामी विद्यारंज)
- ५- परकाया प्रवेश सिद्धि (गोरक्षनाथ रचित)
- ६- देह सिद्धि (स्वामी श्रीरामानन्द)
- ७- परकाया प्रवेश प्रीक्षा रहस्य (स्वामी महानकुल)
- ८- मनुष्य देह और ३३ (स्वामी योगेश्वर)
- ९- एक अनौपचारिक साधना-परकाया (स्वामी जगदेन्द्र)
- १०- मृत्यु सिद्धि और परकाया प्रवेश (स्वामी विमृशानन्द)
- ११- निरंश आत्मा (मां योगनाथ)
- १२- परकाया प्रवेश सिद्धि (भावि मुकुन्दनाथ)
- १३- परकाया प्रवेश और संज्ञा सिद्धि (श्री श्री गङ्गाधरनाथ)
- १४- परकाया एवं सूर्य सिद्धि (स्वामी प्रणवाकर)
- १५- परकाया प्रवेश उपासना रहस्य (मां श्री. विद्यानाथ)
- १६- परकाया सिद्धि (स्वामी योगेश्वर)
- १७- परकाया रहस्य (सैरंग स्वामी)
- १८- मां साधना एवं परकाया प्रवेश (श्री श्री देवदत्त)

इन ग्रन्थों के माध्यम से साधक प्रयत्न करने पर इन शोध में विशेष महत्त्व प्राप्त कर सकता है, ये सभी ग्रन्थ लगभग प्रकाशित हैं और प्रयत्न करने पर प्राप्त हो सकते हैं।

परकाया प्रवेश सिद्धि

परकाया प्रवेश की दो विधियाँ प्रचलित हैं, एक तो योग के द्वारा और दूसरी विशेष साधना के द्वारा, योग के द्वारा तो साधक धपने प्राणों का उद्धार करके उसे जीवित्वा से संबंधित करता है, और उसे धपने निबंधन से से कर अनौपचारिक स्थान पर पहुँचाने की सामर्थ्य प्राप्त करता है, इसके लिए योग मृत के निबंधन में कुछ विशेष ध्यान मुराएँ, और क्रियाओं का परिपालन करना होता है, ऐसा करने पर उसे धपनी

साहित्य

कृत)

पर्व)

१)

वस्तुतः)

ज्ञानदेव)

विशुद्धान्त)

२)

अर्द्धतान्त्र)

तन्त्र)

विश्व)

विज्ञान)

एते पर द्वय

है, ये सभी

पर प्राप्त

प्रति है, एक

त के द्वारा,

प्राप्त करके

उत्ते अपने

पुष्पनि की

के निर्देशन

का परि-

उत्ते प्रपनी

मन्त्र, इस नियन्त्रण हो जाता है, और अपने प्राणों को अपने मन में धन छोड़ता हुआ, पूर्ण प्राणों का प्रयोग देह में प्रयोग कर सकता है, और ऐसा कर के देह को जीवित कर देता है।

जब सब ब्रह्म अपने प्राणों को विमोक्त करता है, तब वह ही विमोक्त अवधि का संकेत भी दे दिया जाता है। और निश्चित परम के बाद बिना संशय का ही निश्चय कि प्राण अपने मूल देह में आ जाते हैं, इन सबके लक्ष्य मुख्य लक्ष्य धृक्ता रहता है, इन वजह से प्राण की प्रवृत्ति एक प्रकार और सूक्ष्म प्रवृत्ति प्रकट होती है, इस क्रिया के माध्यम से भी कई योगियों को ज्ञान मिलता है, जिस में स्वामी पुष्पनि के नामान्वय, स्वामी निर्मल देव सैन्य तथा योगी-मन्त्र आदि प्रकट हुए हैं।

परकाया प्रवेश और मन्त्र सिद्धि

यह वह कार्य पेशीदा है, यतः यदि किसी का मन विमोक्त मिल जाय, तो अवाश उत्पन्न रहता है, अन्यथा परकाया प्रवेश रूप से प्रयत्न करके भी 'परकाया प्रवेश' सिद्धि प्राप्त करने में सफल हो सकता है।

और यह परकाया प्रवेश से सम्बन्धित एक महत्वपूर्ण अर्थों को संशय रूप में प्रस्तुत कर रहा है, साधक स्वान्त रूप में भी मुख्य लक्ष्य से यह साधना प्रारम्भ करके अपने लक्ष्य 'परकाया प्रवेश सिद्धि यन्त्र' स्थापित करके इसके धारका धर्म किसी भी प्रकार की साधना के लिए प्राप्ति की आवश्यकता नहीं होती।

संश्रयम गुरु पूजन कर मन्त्र की पूजा करें, उस पर हृदय, प्रवृत्ति बढ़ावे और शुद्ध पूजा का प्रयत्न दीवक प्रयत्न करें प्रत्यक्षात् विनियोग करें—

विनियोग

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं सत्ये, हं शबले, हस्के खर्वे, क्लीं रामे, हस्के महापतिवृत्ती, शूर्यं परकाया, सिद्धि नारद ऋषिः गायत्री छन्दः, श्री गुरु देवता, गुं शोभं ह्रीं शक्तिः, ॐ कोषकं परकाया प्रवेश सिद्धि प्रोत्पद्ये मन्त्र जपे विनियोग ॥

मानस पूजन

लं पृथिव्यात्मकं शर्वं—समर्पयामि
हं आकाशात्मकं पुष्पं
यं वाय्वात्मकं पुष्पं
रं वातरात्मकं दीपं—दशग्यामि
यं अमृतात्मकं नेत्रं—निवेदयामि
सं सर्वात्मकं ताम्बूलं

मूल मन्त्र

ॐ परात्परार्पे विनिर्मुक्त्यै परकायै ह्रीं कुलेश्वर्यै नमः ।

यह मन्त्र मात्र पांच लाइन उस मन्त्र के सामने अपना होता है, और मन्त्र जप सत्पति के बाद जब सिद्धि प्राप्त हो जाती है, तो योग सिद्धि अवाप्तन तथा कर परकाया प्रवेश किया जा सकता है।

वास्तव में ही यह धर्म और गोपनीय साधना रहस्य है, योग साधकों को इसमें ध्यान लेकर सततता प्राप्त करनी चाहिए।

आश्चर्यजनक शक्तियां छिपी हुई हैं

छठी इन्द्रिय में

छठी इन्द्रिय का तात्पर्य है, हमारे के मन के रहस्यों को स्वतः जान लेने की क्रिया। हमारे आसनों में भी तीसरे मन का वर्तन-नियंत्रण प्रोवा है, जसवान शिखर को तो जिन-नेत्र कहा गया है। यह तीसरा नेत्र प्रांतिक मन या ज्ञान नेत्र कहा जाता है। वादशा दोनों शक्ति तो नमं चक्षु होती है, जिनमें आकाश की सारी शक्तियां भौतिक पदार्थ प्राप्ति देव करने हैं, परन्तु इस तीसरे मन के माध्यम न हम मन गुप्त रहस्यों को भी देख सकते हैं, जो सामान्यतः हमें चक्षुओं में नहीं देखा जा सकता, इस तीसरे नेत्र को 'प्राप्त चक्षु' कहा गया है।

कुण्डलिनी और तीसरा नेत्र

कुण्डलिनी जागरण जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि है, हमारे गूदे गरीर में कुछ विशेष चक्र सन्निहित हैं, जो कि गुप्त धर्मशा मे हैं, ये चक्र आन्तर की सारी शक्तियों को जागृत करने में समर्थ हैं, इसका प्रारम्भिक चक्र मूलाधार कहा जाता है, इसके बाद स्वर्णिष्ठान चक्र, विष्णु चक्र और शिखर चक्र होते हैं। मूलाधार चक्र गुदास्थान के पास सन्निहित है, जिस स्थान के पास स्वर्णिष्ठान चक्र स्थित है, शिखर चक्र, हृदय पर प्रकाशित चक्र, कण्ठ में विष्णु चक्र तथा दोनों भागों के मध्य में शिखर चक्र स्थित है, मूलधार में हनुमन् मूर्तत धारणा में गड़ी रहती है, कुछ विशेष विचारों के हनुमन् की जागृत

क्रिया जाता है, जगत् पर यह ऊपर की ओर उठती है, और उपरोक्त चक्रों को केन्द्री हुई, शक्ति चक्र तब वा पहुँचती है, शक्ति चक्र दो पद्यों में संयुक्त बनकर प्रकाश का परिवाहक है, प्रकाश-चक्र जगत् की शक्ति का प्रवाहक है, जिससे भी शक्ति के जीवन के बारे में पुरा-पुरा ज्ञान हो जाता है, वह एक क्षण में ही उनके भूत-काय और भविष्यकाल को जान लेता है। तीसरे चक्र के स्थान पर बैठा-बैठा सशक्त चक्र की हलचल को अनुभव कर लेता है, वह उस प्राकृतिक के माध्यम में यह जान लेता है, कि शक्ति शक्ति मध्य में प्रकाश में कहां-कहां पर प्रकाशित हो पाया, चट्टान हो सकती है, इसी प्रकार चक्र को आसनों में 'तीसरा नेत्र' कहा गया है, यहाँ जो शक्ति में हमें यह शक्ति कहते हैं, और इस विषय पर संकट पुस्तकें लिखी हुई हैं।

जो शक्ति तीसरा नेत्र या शक्ति चक्र कहने पर प्राप्त होनी है, वहो 'मिथिल सैन' या छठी इन्द्रिय के माध्यम में की शक्ति उन शक्ति शक्तियों को जान सकता है, जो सर्वथा धर्मात्मा, गोपनीय और प्रहसित्व होते हैं, कई बार यह शक्ति किसी-किसी को स्वतः प्राप्त हो जाती है, और कभी-कभी प्रत्यक्ष करने पर इस शक्ति को हस्तगत भी जा सकती है।

यों सामान्यतः प्रत्येक व्यक्ति में शक्ति बहुत कम है

होती है कि किसी आधार पर वह प्रत्यक्ष
हो जाता है, किसी व्यक्ति को देखते ही
आपके मन में प्रभाव भाव पैदा हो जाता है कि यह व्यक्ति
किसी एक है, यद्यपि वह व्यक्ति धार्मिक है और
यह वह वह मान मान्य उत्तरती है, ऐसा नेता को
होना चाहिए।

इस क्षिति गुह्य भावना में भग के अत्यन्त शक्ति
का प्रकाश है। जो वान कह देता है, तो वह वषट्क
हो जाता है, ऐसी क्रिया को ही हमारे गारवों में
प्रकाश का भावना कहते हैं।

हिसामु का किस्सा बिबन बिचाल है, बाबर हिसामु
 के बँका पर बड़ा हुन था, सारे हुनो को ने बकाइया
 कर उसे वनमें एक सतलज प्रांत कि या, परतल
 नानु को ही नानु के मुह की कोर प्रमन हो रहा
 एक बिता बाबर ने पनुनच यि कि कुछ ही
 ने विसामु को मृत्यु निषिध है, सब बाबर उभा-कुदा
 प्रमनार ने प्रांत की की वह हिसामु को अविद ने
 इकल बरन से हिसामु की बीमारी उसे दे बै
 का नचने हुन से प्रशा प्रमन बिना ने की गई की
 इतिहास माओ है कि उस दिन से प्रमन बाबर
 के हुन प्रशा प्रो वार बाबर ने प्रमन बाबर
 का गया प्रो कुछ ही दिनां वाय बाबर की मृत्यु हो
 ने वह छठी दिस कि अमलत का उमर इकल है, इन
 वन में यह पट्ट हो गया कि उन का इतिहास, हकीम
 का इतिहास ही कर कती बड़े का प्रशा कर प्रमनार

पदान के पास त्रिचनापुर में ब्रजबन्मा नाम की महिला रहती है, जिसकी प्यास केवल त्रिचनापुर में ही नहीं; पशु पक्षी सभी पक्षों में ही मिल जाते हैं, उनमें मिलने के लिए घात है, इस महिला के पास किसी प्रकार की कोई राखण या सिद्धि नहीं है, वह स्थल कहती है कि मैंने राखण अर्थात् कोई राखण नहीं, वह राखण को पशु पक्षी मिल जाता वही है राखण

खरीदने पर उम्र बढ़ती है कि इस रोगी को क्या खींचा है, और उसे क्या खींचा है। चाहिए बचने के लिए ऐसी सेवा पर वे निकाल कर उसको जाने के लिए वे देती हैं या उसके शरीर पर क्या देती हैं और वह खुले और हो जाता है, ऐसे एक दो नहीं मिले तब तक अचानक वहाँ पर घटित होते हैं।

एक बार एक स्त्री अपनी जवान लड़की को ले बार उसके पास आई और बताया कि उसके बड़े घर में मरे हुए दादा की धड़ियाँ बंद पंगे हैं कि बेहतर कुर्रण होने लगा है, प्रायः वात के लिये इस लड़की से पूछा करते लगे हैं, अब तो इसका विवाह भी बन पड़े है, और इस लड़की से चुकी हो कर दो-तीन बार प्राप्त हुआ का प्रयास भी किया है।

वलिदम्मा ने उसे ध्याने सामने बिठाया और कुछ क्षणों के लिए ध्यान मन ही मन, व्यवस्था में ही उसे एकसम दृष्टि के द्वारे से सदा दायों पर निम्नर बनाया। जाय तो यह टीका ही अलगाँ श्रौंमें धोनेसे पर समीपमा ने बर से साधार निष्ठा कर उसे तेल में मडा और लक्ष्मी के चेहरे के चित्रों पर बना दिया और बर चले जाने के लिए कह दिया। दूसरे दिन उसकी मा लक्ष्मी को लेकर वलिदम्मा का घरवाला करने के लिए भाई के चमक प्रसनों में उसके चेहरे के दाग हूमेमा के लिए एकसम दृष्टि ही मने ही और बह पुनः स्थल तथा मन्दर बन गई है।

• एक बार एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति बनिवम्मा के सामने
लाया गया जो इरिगुला का महत्त्वपूर्ण प्रतिनिधता और
राज्य के नाम था। बनिवम्मा ने उसे पकड़ सांने ले जावे के
लिखे पढ़ा और स्वयं व्यास माना हो गई, प्रधानावस्था में
हो उठा। सामने ठाम गौरी के जहॉर का पुरा बिज
पिन वहां जैसे कि काई गुम्बर - छोट हूँ, और उसे
हमाल भी दिया, कि इस हदुय की बीमारी नहीं है।
इसके दोले गुरी में प्रजन है, माता ही गाव उसे हमास
दिया, कि दूध दिकी कपूर में कासा धारा वहां

मिथा जाय तो यह मन्त्र राजनेता इस रोग से मुक्ति पा सकता है।

यनियम्मा ने ऐसा ही, क्रि.श.सौ. एकसप्ताह के भीतर भोतर बड़े स्थिति पूर्णतः रोग मुक्त हो गया, उससे पुनर् को बूझ जानी रही थीर वह सर्वथा विरोग हो कर अपने कार्य में लग गया जो कान डाक्टरों की टीम और हजारों कर्मों को अधीन नहीं कर सकी वह साथ एक कारे धान में कर दी, पर यह केवल क्षणिक धिया ही नहीं था यनिपु २-६ के पीछे यानियम्मा के छोटी इन्द्रिय को बेचना जालि भी थी।

यनियम्मा सीधी मादी सामान्य गृहस्थ महिला है जो चिकित्सक उसका समय पूजा पाठ में ही व्यतीत होत है, एक दिन जब वह पूजा पाठ कर रही थी तो उसे बेचना हुई कि वह रोगी को देखते ही उसके रोग के क्षण में जान सकती है, और उसका उपशय भी कर सकती है, इसके बाद से उसने यह परोपकारी कार्य प्रारम्भ कर दिया, और आज उसके घर के सामने हजारों लोगों की भीड़ खसी रहती है।

एकाग्रता ही छोटी इन्द्रिय है

मन की एकाग्रता अपने धार में बहुत बड़ी शक्ति है, जिसके माध्यम से प्रत्येक कार्य भी संभव किये जा सकते हैं, छोटे छोटे मान्य वातावरण में बैठ कर ध्यान लगाते पर ध्यान की एकाग्रता प्राप्त हो सकती है, इस पर पूरे विश्व में प्रयोग हो रहे हैं, और उन्हें प्राक्प-जनक सफलताएं प्राप्त हो रही हैं। रूस की महिला किरताया का नाम दूर दूर तक फैला हुआ है, मन की एकाग्रता के द्वारा वह हिलते हुए पेटुलम को रोक लेती है, डेबल पर पड़ हुए स्टील के बम्बन को मन की एकाग्र कर दोनों धावों से एक टक देखकर बम्बन को अपने स्थान से सरका बेती है, पिछले मन्मन्त्र में उसने मन की एकाग्रता का सर्वश्रेष्ठ परिचय दिया, उसके छोटे हृद पर पर मन एकाग्र कर दुष्टि शारी और

हार्डवर की आर बचाने की प्रार्था की, हार्डवर ने बहुत प्रयत्न किया इन्जिन तो पूरी शक्ति में चल रहा था परन्तु कार ठम से मम भी नहीं हो रही थी, किरताया ने अपनी मजदूरी कार से हटाई तभी कार का चिक्क लगी वह मन की एकाग्रता का प्रत्यक्ष प्रमाण था।

डोक ऐसी ही महिला गृहस्थ की तीना बर्गिन है जिसकी पत्नी मान गृहस्थ में ही नहीं, पूरे अमेरिका में है वह दो हजार मील दूर मन करने मन की एकाग्रता की शक्ति में प्रवेश करी है, और वहीं पर बाइबल का पावन होता है, गृहस्थ में नामग हो हजार मील दूर सिनसिमी माडर में एक बर्गिन के हृदय का प्राप-रेण हो रहा था, तीना ने गृहस्थ में बैठे बैठे उन हृदय की गृहस्थ को कम या ज्यादा करके कता दिया, यही आपरेक्षण के दौरान एक बार की उस रोगी के हृदय में छड़कना ही प्रत्यक्ष कर दिया, ऐसीमोन ने बराबर काता-लाप चा-या, तीना दासित में बड़ी बीटे बीटे निश्चय बन्द हृदय की चढ़ न की बर्गिन छड़कने का प्रादेश दिया और आपरेक्षण टेबल पर ही वह हृदय धड़कने लगा। और एक बार फिर वह प्रामाणित हो गया कि मन की एकाग्रता या छोटी इन्द्रिय में बहुत बड़ी शक्ति होती है, और इसके माध्यम से कठिन कार्य किये जा सकते हैं।

रूस और अमेरिका में छोटी इन्द्रिय पर परीक्षण

इस समय हम दोनों देशों में मन की एकाग्रता या छोटी इन्द्रिय की शक्ति को लेकर बराबर परीक्षण चल रहे हैं, और इसके से सफलता भी पा रहे हैं, हमी कुछ क्षिणों पहिल अमेरिका के प्रसिद्ध पत्र में समाचार प्रकाशित हुआ था कि रूस में मन की एकाग्रता या छोटी इन्द्रिय पर विशेष सफलता प्राप्त कर ती है और इनके माध्यम से पांच हजार मील दूर स्थित पनडुबो के बाधकों को प्रादेश देने में सफलता पा ती है, इस शक्ति

प्रयोगशाला में टबल पर वही हूए उस मेडिकल के हृदय को
बन्द कर दे, रोमी ने डायन एकाग्र कर देता ही किया,
चोर उसी क्षण क्रोध ने गन्धर्व कायन किया गया तो
नीच ने बताया कि मैं जिस के हृदय पर परीक्षा कर
रहा था - इसभी तक तो छड़क रहा था, पर रो पाए
सीछड़क पहले ही उनमें छड़कना शब्द कर दिया है, या
दूसर जायेंगे मैं यह छड़क समाप्त ही गया है, नीच के
अंश में जबकि दो कोई लक्षण नहीं था, कि वह हृदय
प्रयोगशाला बन्द कर दे।

इसमें योगी की इच्छा शक्ति और एकाग्रता शक्ति पर विश्वास हो गया और यह भी प्रमाणित हो गया कि इस छोटी इन्दिय के माध्यम से जगत् में भी प्रवेश होती है। यह घटनाओं की देख-ज. सकता है, जो उन घटनाओं में सम्मिलित किया जा सकता है।

कैसे होता है—छठी इन्द्रिय का जागरण

वस्तुतः वारं वं नोन शकार की शक्तियां होती हैं, १) धीवन्त वा शारीरिक शक्ति २) बौद्धिकशक्ति. और ३) मनःशक्ति । ध्वनि वारोरिक शक्ति का तो प्रयोग सिखा कई नौ वर्षों ने कृत्ता प्रा रहा है, बोझा उठाना, परि-
 खस कला, भावि, ऐसी ही शक्ति है, इसके अलावा श्रवणमुद्र पहले की मधेश्वर उवादा बौद्धिक शक्ति का उपयोग करने लगा है, यद्यपि वैज्ञानिकों ने प्रगुत्तर
 समी तक भी मानव शरणी बौद्धिक श्रमताओं या बौद्धिक शक्ति का ३० प्रतिशत ने ज्यादा उपयोग नहीं कर पा रहा है, परन्तु मन्त्रशक्ति के प्रयोग के बारे में तो वह श्रमी तक फिला ही है. और केवल उन्नत पात्र प्रशिक्षित ही उपयोग करने ने बहुत समर्थ हो सकते हैं।

ध्यान, धारणा, समाधि या कुन्डलिनी आदिरण के द्वारा ही इस प्रत्यक्षता का विकास होता है, धीरे-धीरे प्रत्यक्षता होता है, धीरे-धीरे प्रत्यक्ष करने पर मनुष्य शक्ति या मनःशक्ति बहुत प्रत्यक्ष कहती है, इस शक्ति शक्ति के सहारे व्यक्ति दूसरे के योगों को मिटा सकता है, संसार में कही पर होने वाली घटनाओं को देख सकता है, चुन सकता है, मनुष्य के मन की गोपनीय बातों को देख सकता है, ऐसे व्यक्ति के लिए किसी का कोई रहस्य गोपनीय नहीं रहता ।

चाप चलाना करें कि यदि कोई व्यक्ति गैरसाक्षि के गृहपर किसी व्यक्ति के दृष्टवान को जान ले तो किसी बड़ी दुर्घटना हो सकती है, यदि नाम वाले ध्वजारों या व्यक्ति के नाम की बातों को जान ले तो बहुत बड़ी घोरता या निराशा उत्पन्न हो सकता है, यदि यह मनसाक्षि का प्रभाव बढ़ा दिया जाय तो दूसरे राष्ट्र या कौन्सी देश के राष्ट्रपति या प्रधानमन्त्री के दिमाग में क्या बातें घुम रही है, उमका पता प्रान्तों में खुलावा जा सकता है, इनके द्वारा विरोधों को अपने समर्थन में खड़ा जा सकता है, राष्ट्र की संपत्ति काशानुसार चलने के लिए बाध्य किया जा सकता है, प्रयासों को अपने मनोदुःख प्रयास मिलने के लिए प्रयोग किया जा सकता है, और किसी भी राष्ट्र को सहायनी से अलग कर सकता है।

प्राचीन योगियों ने इसकी दो विधियाँ बताई हैं,
कूण्डलिनी जागर, रजसों की जागृत करने से श्रवण
नित्य ध्याना चण्टा किमी एकांत स्थान पर बैठ कर व्यास
जपाने से । ध्यान स्थान के बाद उक्त शक्ति के सहज

पात्रा दे और देते
 जाने में समर्थ हो स
 हुई बड़ी को रोकने
 मरकतने जैसी किया
 इन बलीभिय शक्ति
 नम्यप्र किये जा सक

योग पाराशर
भी दिया है, इस प
पतीन्द्रिय शक्ति
उम्हने स्वीकार कि
हारा खड़ी इन्द्रिय
बनाया जा नकश

अतीन्द्रिय प्रय

यह प्रयोग
प्रारम्भ करता है
जिस समय चारों
संलग्न शक्ति
निमित्त 'प्रतीति' का
रखता हुआ निम्न
जप करता है,
प्रयोग की जगह

इस मन्त्र के
से विशेष संबंध
ऊर्जा उत्पन्न होता
ऊर्जा साधक में

भाषा में और देते कि वह शक्ति विद्वाना प्रभाव दिया करने में समर्थ हो सकी है, पहले इसका प्रयोग कलसी हुई घड़ी को रोकने या टेबल पर पड़े हुए सम्पत्ति की सुरक्षाने जैसी क्रियाओं से कर सकते हैं और धीरे-धीरे इस अतीन्द्रिय शक्ति को बढ़ा कर कठिन कार्य भी सम्पन्न किये जा सकते हैं।

योग पारामर में इसकी मंत्रात्मक विधि का प्रयोग भी दिया है, कम और अमेरिका में भी इन मन के सहारे अतीन्द्रिय शक्ति के विकास में सफलता पाई है और उन्होंने स्वीकार किया है कि इस मन्त्र और मानवा के द्वारा छोटी इन्द्रिय को शक्ति की प्रदान क्षमता युक्त बनाया जा सकता है।

अतीन्द्रिय प्रयोग

वह अधीन निम्न प्रातः पांच बजे के वास्तु-पाम प्रारम्भ करना चाहिए, यह एक घण्टे का प्रयोग है, जिस समय जारों काक कोमाहव कम होता है, और लक्ष्य ज्ञाति रहती है, तब आने सामने लाने से निमित्त 'अतीन्द्रिय यन्त्र' को रख कर उसके मध्य में स्थित रजता हुआ निम्न मन्त्र का एक घण्टे तक करावर मन्त्र जप करता रहे, इस में किसी भी प्रकार की गलती के प्रयोग की जरूरत नहीं है।

मन्त्र

ॐ ह्रीं मनस् महिम्नं ह्रीं फट्

इत मन्त्र का तात्पर्य पर निर्मित 'अतीन्द्रिय यन्त्र' से विशेष संबंध है और इन दोनों के सहयोग से जो ऊर्जा उत्पन्न होती है, उसे 'अतीन्द्रिय ऊर्जा' कहते हैं, यह ऊर्जा साक्षक में एका होती रहती है, मात्र काचित



दिली तक निम्न एक घण्टा प्रयोग करने से उसे साक्षर्य-जनक परिणाम प्राप्त होता है, अब दोस्त और अमेरिका के वैज्ञानिकों ने भी स्वीकार किया है कि इस मन्त्र के उच्चारण से कुछ ऐसी सहारे उत्पन्न होती है, जो मानके पड़े यन्त्र से उत्पन्न कर माध्यम के कारण से जा कर छोटी इन्द्रिय को आश्रित करने में समर्थ होती है, और इससे व्यक्ति की छोटी इन्द्रिय जाग्रत होती है और उसके माध्यम से अतीन्द्रिय कार्य भी सम्भव करने की क्षमता प्राप्त होती है। ★



आयुर्वेद

वह पल प्रतिपल सुन्दर होती जा रही है

संसार में किसी भी स्त्री की वो ही इच्छाएं रहती हैं कि वह सभी दृष्टियों से स्पर्श व धीवमय बनती रहे और मोक्षार्थ आत्म की दृष्टि से वह पूर्ण सुन्दर हो। जिससे कि परपुरुषों के चित्त को आकर्षित करने में सफलता प्राप्त करे।

सुन्दरता भगवान का दिया हुमा, स्त्री जाति को करवाना है परन्तु आयुर्वेद भी भगवान का ही हुकरा स्वरूप है, "चरक संहिता" में एक जगह लिखा है, कि प्रत्येक स्त्री भी सुन्दरता देता है वह तो सर्वस्वीकार किया जाता है, परन्तु आयुर्वेद के माध्यम से उस सुन्दरता में परिपूर्ण बनकर दृष्टि की जाती समझ है।

और वह सुन्दरी

समस्त आयुर्वेद के ग्रंथों में वह कथा प्रसिद्ध है, कि राजा भोज के दरबार में एक अत्यन्त ही सौम्य मेढावी और दश बँध थे, जिनको जनकवती का दूसरा भवतार कहा जाता था। उसी उम्र तो मात्र ४० वर्ष की ही थी, परन्तु इतनी छोटी सी उम्र में ही उन्होंने आयुर्वेद का जो ज्ञान प्राप्त किया था, वह अपने प्राप में अत्यन्त था, दरबारों और उज्जैन नगरी के निवासी तो उनका सम्मान करते ही थे, महाकवि कालिदास ने भी अपने कवियों को न वह स्वीकार किया है, कि बैराज बिभूत के समान आयुर्वेदार्थ न तो पुष्पी पर पैदा हुआ, और न

आगे पैदा हो सकेगा, एक तरह से देखा जाय तो उस रक्षा या जैसे जनकवती स्वयं उसकी आत्मा में बँधे हुए हो, कालिदास के धनाता कवि बैराज पण्डित माधव, अण्णविश प्राप्ति ने भी विष्णु के ज्ञान की भूरि-भूरि प्रशंसा का है, और उनके आयुर्वेद ज्ञान का पूरा उपयोग किया है।

कालिदास महाकवि और विद्वान होने के नाथ ही साय मोक्षार्थ पारखी भी थे, कवि हृदय होने के कारण उनका किसी से प्रेम संबंध बन गया और सोने बोरे यह प्रेम-संध बनता ही गया, मोक्षार्थवती पुष्पवल्ली की शबर कवि की वाक्य रचना निम्न पाई थी, जब उनके काव्य में उवादा रस, उवादा भाव प्रकण्ठ धाने लगी थी, परन्तु कालिदास सामान्य कवि नहीं थे, सरस्वती उनके कण्ठ में निराजमान थी, कालिदास ने लगभग मोक्ष धार्मिक पदों की रचना पुष्पवल्ली के लिए की परन्तु उनके मन में एक बकोट बराबर लगी रहती कि मेने जिससे प्रेम किया है, वह निश्चय ही सुन्दर तो है, पर वह विश्व की अत्यन्त सुन्दरी नहीं है, किसी भी पुरुष को पुष्पवल्ली मोक्षार्थ की साधारण प्रतिमा बन सके, रति की दूसरी प्रतिकृति बन सके, और उसका मोक्षार्थ ऐसा दिव्य-दिव्य करता ही कि कोई भी उसको देखकर उगा सा रह जाय, तभी जीवन को पूर्णता हो।

वे पुष्पवल्ली पर काव्य रचना ठो करते, परन्तु फिर

भी उनके मन में।
माधव सुन्दरता का
पा रहा है, इस स
बाहिए, बैराज स
तनी सम्भव है, व

एक दिन का
के घर पुष्प-पुष्प
वास में पुष्पवल्ली
तो है, पर मैं चा
प्रकारपुंज ही।

छात्रों में भी
हुआ सा प्रतीत है
लकीली और कम
इस प्रकार के दावे
भी व्यक्ति उसे दे
और उसकी छवि
हो जाय कि वह
न सके, मैं पुष्पवल्ली
बताये हुए हुम्मा
जिसकी कोई मया
क्या, पूरे भारतक

उसकी वाणी
हो, पूरा कहना
मुनाब की वर
कामदे की की
पूरा समुद्र उमक
पतली की न
के साथ-साथ
दुला हुआ हो, कि

कोड़ी देन

भी उनके मन में यह कचोट रह्यो कि जितनी गहराई के साथ सुन्दरता का वर्णन होना चाहिए उतना नहीं हो पा रहा है, इस सौन्दर्य वर्णन में जितनी गहराई घानी चाहिए, वैसी गहराई घा नहीं पा रही है, और वह सभी सम्भव है, अब पुनर्वर्ती प्रसिद्ध सौन्दर्यवर्ती हो।

एक दिन कालीदास अपने मित्र विद्युत बंध विष्णु के घर सुन्द-मुन्द घने और कुसुमतीक्ष्ण के अन्तर काश्चिदास ने पुनर्वर्ती के बारे में बताया हुए कहा—'यह सुन्दर तो है, पर मैं चाहता हूँ, उसका सौन्दर्य अपने आप में प्रकट हो जाय।

अन्तरे में भी उसके शरीर से जीवन प्रकाश निकलता हुआ सा प्रतीत हो, उसके सारे शरीर को बनाकर नाचुक लचीली और कमनोय हो, सारे शरीर के अंग-प्रत्यंग इस प्रकार के अंगों में बने हुए हों, कि संसार का कोई भी व्यक्ति उसे देखते ही छला भर के लिए ठिठक जाय और उसकी छवि उसके दिमाग पर इस प्रकार से अंकित हो जाय कि वह जीवन भर उसके सौन्दर्य की स्मरण न सके, कि पुनर्वर्ती की आनीब सौन्दर्य काश्चिदास में बताये हुए सुनो के अतुल्य सुन्दर बनाया चाहता है, जिसकी कोई समानता ही न हो, उसके समान उज्ज्वल तो क्या, पूरे भारतवर्ष में कोई सुन्दरी न हो।

उसको बायो में मगुरता हो, छावों में कटीकापन हो, पूरा चेहरा आनन्दान भीम हुए घीस में प्लाजिन मुलाय की तरह खिना हुआ हो, उज्ज्वल रति और कामदेव की भी पात करने वाला हो, ऐसा लगे कि जैसे पूरा समुद्र उमड़ कर घा रहा हो बुद्धि में घाने नायक पत्नी की नाचक पर हो, और उपयुक्त कद के साथ-साथ तारा और कुछ ऐसे प्रमुखात में लला हुआ हो, कि जिनके वर्ण सौन्दर्य कहा जाता है।

बोझो देर तक कर मालीदास ने विष्णु की ओर

देखा, और कहा—मैं आशुक नहीं हो रहा हूँ, पर मैंने आप के मुखों की चर्चा सुनी हो नहीं पावित् देखी थी है, राधा भोग की राजकुमारी को आपने जिस प्रकार से सौन्दर्य प्रदान किया है वह अपने आप में बेबाग है, परन्तु मैं उन राजकुमारी से भी ज्यादा सौन्दर्य मुकुमारता, लज्जा शोचता, और प्रभावोपायकता उपकरी में देखना चाहता हूँ।

फिर कहीं खोते हुए से कालीदास ने कहा—आप कुछ ऐसा कीजिये कि उसके बात भरने की तरह लहलहाते हुए काले और घने हो, ललल दिष्ट दिष्ट करती हुई प्रभाव पैदा करने में सक्षम हो, दोनों बांधे हमनी गहरी और कोल की तरह स्वच्छ हो, कि जो भी उसे देखे अपने आपसे ही डर जाय, बानों तक पीली हुई उन सुन्दर बांधों की तुलना ही न हो।

छोटो की सुन्दर नासिका और उसके नीचे दो नाचुक पतले और इतने सुन्दर होठ हो, कि जैसे मुलाय की पंखुरी पर दूसरी पंखुरी रख दी हो, और उसके चिबुक का गहरा इतना आभ्यर्चक हो कि सारे संसार के पुरुष उसमें मृद पडने के लिए धातुर हो, मैं चाहता हूँ कि जब यह मुस्कराये तो गालों में गड्ढे पडे जब वह किसी की ठिठकी नजर से देखे तो वह वहीं भर मिटे।

विष्णु ने कहा—महाकवि कालीदास आप नो कवि होते जा रहे हो, आप.....

बात की बीच में ही बचने हुए, कालीदास बोले मैं दुनिया को बिदा देना चाहता हूँ कि सौन्दर्य बना होता है मैं राजकुमारी के रूप सब को आश्चर्य करता चाहता हूँ, मैं उसे बता देना चाहता हूँ, कि उससे भी ज्यादा सुन्दर उज्ज्वल नवरो में विद्यमान है, पुनर्वर्ती की बहन हंसिनी के समान उठी हुई और वारदा हो वारदा लज्जा की तरह उमड़ा हुआ हो, जो पूरे लला की ओर शोचन की मिटा देने के लिए धातुर हो, उसका उदर अत्यन्त ही आकर्षक हो, जिस पर नाभी ऐसी

प्रतीति हो माना का मन्त्र स्वयं उसमें पुनः कर बैठता हो, वतनी सी वाजुक कर इतनी ध्वजक लकीरी हो, कि यथार्थ पर सो बार लक कर लू जाय ।

फिर कुछ ठक कर कालीदास बोले—विश्वत, उसकी जगहाने हस्तीमुख को तरह आनुपातिक हो, छोटे-छोटे प्रकर्षक कोर सुन्दर पर ऐसे हो कि जैसे धरती पर लक्ष्मी पर संत से हो जायेंगे उसकी चान में एक मन्त्र गति हो कि जैसे खनखनाती हुई, नदी बह रही हो, सारा शरीर एक साथ में डूबा हुआ प्राथमिक, विद्युत प्रतीति हो रात्रि में भी उसके शरीर के सोम्य से प्रकाश का दीप्ता हुआ अनुभव हो, जारभी में पद्मिनी नारी के शरीर से निकलती हुई जिस मासक गंध का वर्णन शास्त्रों में है, मैं चाहता हूँ कि पुण्यवल्ली के शरीर से भी ऐसी ही सुगन्ध निरगत प्रकटित हो ।

वह अपने आपमें सोम्य की साकार पुंज हो, उसका कद पूर्ण और उसके चेहरे का प्रभाव अतिशय हो घोर में सन्तना कि मेरे इस स्वप्न को तुम ही सार्थक कर सकते हो, मैंने राजकुमारी की साधारणता भी देखी थी, और आपके द्वारा दिये गये वाक सेवन से उसके अस्तित्व पर परिचित सोम्य की भी देख रहा हूँ, अपने आपमें वह सोम्य जालिनी बन गयी है, पर विश्वत, सोम्य की यह अंतिम पराकाष्ठा नहीं है, सोम्य तो इतने भी मागे बढ़ा-बड़ा हो सकता है, घोर में ऐसा हो सोम्य के पुण्यवल्ली में देवता चाहता हूँ, जिसके सोम्य से कृपा पुष्प बग्न बधा हुआ रहे जिसको सुस्तन से व्यक्तित्व प्राप्त हो जाय, जिसके छोटे से चूँच में से सामने वाला रूप कर रह जाय, और तुम्हारे पास इसीलिए अपना हूँ कि तुम्हें मेरा अनुपम स्वीकार करना ही होगा और जो शोधित बना कर खाने के लिए आपने राजकुमारी को भी है, उससे भी थोड़ा एवं अतिशय शोधित आप पुण्यवल्ली के लिए बनाये, मैं चाहता हूँ कि मेरी प्रिया विश्व में अत्यन्त ही अग्रिम हो, अतिशय हो ।

विश्वत कुछ क्षण चिन्तनग्रस्त हो गये, लगभग १५

साल मिट्टी के बाद वे वैतन्य हुए और बोले—महाकवि कालीदास ! आप विश्व के अतिशय कवि और सोम्य रात्रि हैं, आप पर हृषिको हो नहीं पूरी शारानगरी की गन्ध है, आप जीवन में पदवी और अनुपम ले कर मेरे पास आये हैं, मुझे ऐसी ही एक शोधित का ज्ञान है, जिसे अभी तक बनाकर किसी को नहीं दी है, वह देवता से हो प्राप्त शोधितकल्प है जो सारे सोम्य का पूर्णतः काया-कल्प करने में सक्षम है, इस शोधित को बनाये में लगभग तीन वित्त मुँग जायेंगे ।

परन्तु ऐसी शोधित विश्व की अत्यन्त शोधित हो कही जा सकती है, जिते वागे के लिए उर्वशी मेनका और रम्भा की लानछान है, जिस प्रकार से श्रावने पुण्यवल्ली का सोम्य कल्प करने के लिए कहा है, उसने जो ज्वाला सोम्यजालिनी वह ही संकपी, यह शोधित कल्प है, जिसका नित्य ही सेवन करना होता है, मान लीजिये कि सेवन से पुरे शरीर का सोम्य कावाकल्प का तरह परिवर्तित हो जाता है और वह सदा यथा में सोम्य की साकार पुंज बन जाती है, यही तक ऐसी शोधित मैंने राजकुमारी को क्या किसी को भी बनाकर नहीं दी है, परन्तु आप के लिए मैं इस शोधित का निर्माण अवश्य करूँगा आप एक महीने के बाद मेरे पास आएँ, मैं आपकी मनोवांछित वस्तु अवश्य ही आपकी दूँगा ।

सन्तुष्ट होकर कालीदास अपने घर लगे गये, इसकी खर्चा किसी को नहीं की, वे पुण्यवल्ली को दास्यवर्कित कर देना चाहते थे, अगर प्यार जीवन का सोम्य नहीं हो, अगर प्यार विश्व का अत्यन्त घोर अतिशय नहीं हो तो फिर प्यार का महत्व ही क्या, मूल्य ही क्या, इसके लिए तो पूरी सम्पत्ति घोर जीवन की समान हो जाय पर ऐसा सोम्य प्रलम्ब रह सके तो वह इतिहास की धरोहर बन जायेंगे ।

विश्वत ने देवताओं में भी सर्वश्रेष्ठ अवगान शिव के प्राप्त स्वर्ण धाम्य के पादार धारिणी कुवार से प्राप्त सोम्य कल्प का निर्माण प्रारम्भ किया, बाद में

विश्वत ने सोम्य की, जो शोभावां प्राप्त भी जयनी ! यह पुस्तक गोपनी से ऊँच दासों में

इसमें उक्त घोर के सपत्नी को कावाकल्प हो का कावाकल्प हो जाती महिमा वि

इसमें बनाना है, जिसके नाम का श्रमाल (५) का (७) हृषिको यवतिष्ठा (११) वचनग्रा (१८) जया (२३) स्वयं (२०) मुक्तप्रान् (२३) कामकल्प (२३) ब्रह्मरथ (२३) बल्लरी (२०) शीर्षा ।

ये नाम सब प्राप्त हैं, पर गये हैं ।

विश्वत ने क विषयों के माध्यम जिसकी पूरी विश्व पुस्तक तो जयनी नेपाल के राज्य श्रीमत् बाबा जी प्रतिनिधि करने

विश्रुत में 'सौन्दर्यकल्प' नाम से छोटी ही पुस्तक की रचना की, जो सोनाई पर प्रकृत है, दुर्भाग्य से यह पुस्तक आज भी जर्मनी में सुरक्षित है, जहाँ की के समय में यह पुस्तक योपनीय दुर्ग से इंग्लैण्ड चली गयी और वहाँ से ऊँचे वासी में जर्मनी के हाथों पहुँच गयी।

इसमें उक्त श्रौषधि का सामोपाय वर्णन है, जिससे शरीर के तमस्त रोग समाप्त हो जाते हैं, पूरे शरीर को कायाकल्प हो जाता है, और दूसरे शब्दों में सौन्दर्य का कायाकल्प होकर इसके लेवन करने वाली सोनाभ-शाली महिला विश्व की अनन्य सुन्दरी बन जाती है।

इसमें यज्ञांत ब्राह्मणिक श्रौषधियों का समावेश होता है, जिसके नाम हैं— (१) ऋग्वेदा (२) यजुर्वेद (३) सामवेद (४) सधुरिका (५) सूर्यकांत (६) सोमवल्ली (७) हंसपदी (८) हस्तिपुष्पी (९) हीरक (१०) यमवल्ली (११) सज्जान (१२) लक्ष्मणा (१३) यमगच्छा (१४) जलपुष्पी (१५) शिलाजालु (१६) सर्व-जया (१७) स्वर्णवल्ली (१८) मत्स्याक्षी (१९) मानकं (२०) मुक्ताग्र (२१) अग्निशिखा (२२) कपीतपदी (२३) कामरूप (२४) कुरंदक (२५) ज्योतिष्मति (२६) अन्नमर्द (२७) हरितक (२८) वारव (२९) अमर-सलरी (३०) गन्धमदनी (३१) मंथमल्लिका (३२) शिवती।

ये नाम संस्कृत में हैं पर ये आयुर्वेदिक श्रौषधियाँ प्राप्य हैं, पर इनके नाम समय के अनुसार बदल गये हैं।

विश्रुत में यद्यपि इन ग्रन्थ में इन आयुर्वेदिक श्रौषधियों के माध्यम से 'सौन्दर्य पाक' का निर्माण किया जिसकी पूरी विधि इस पुस्तक में प्राप्य है, यद्यपि मूल पुस्तक तो जर्मनी में है, परन्तु मुझे इसकी एक प्रति नेपाल के राज्य सङ्ग्रहालय में देखने की मिली थी मैं श्रियुक्त बाबा जी का साभार है कि उन्होंने मुझे इसकी प्रतिनिधि करने की अनुमति दी।



इस पुस्तिका में 'सौन्दर्य पाक' बनाने का प्रासादिक और पूर्ण विवरण दिया है जो कि इस दृष्टि से विश्व का एक मात्र ग्रन्थ है और दूसरे शब्दों में कहें तो विश्व की यह अद्वितीय पाक श्रौषधि है, जो अपने प्राप्त में पूर्ण प्रासादिक और सुरक्षित संपत्ति प्राप्त करने में समर्थ है।

विश्रुत ने श्रौषधि बना कर वास्तविक को दे दी और कालीदास ने उस पाक का लेवन पुष्पवल्ली को अपने सामने कराया, तीसरे चौथे दिन से ही उसकी काया में निश्चार घटने लगा, शरीर स्थित रोग समाप्त होने लगे और काया में परिवर्तन घटने लगा, दस दिन बाद ही ऐसा लपके लगा कि वह कोई और पुष्पवल्ली है,

कालीदास ने मनोबोधपूर्वक पूरे तीन दिन तक निबनों के अनुसार उस सौन्दर्य पाक का सेवन पुष्पवल्ली को कराया और तीस दिन बीतते-बीतते वो ऐसा लगने लगा मानो पुष्पवल्ली आकाश से उतरी हुई, साधारण रही हो, जिसकी तुलना बिंदी से भी नहीं की जा सकती, सारी उर्वर्जन मगरी में उसके सौन्दर्य की चर्चा होने लगी, केवल उर्वर्जन मगरी में ही नहीं दूर-दूर तक उसके सौन्दर्य की चर्चा फैल गयी, पाँच केवल उसकी भजन देखने के लिए व्याकुल थे, राजकुमारी ने भी पुष्पवल्ली को बुला कर देखा और उसकी देखने के बाद उसे भणम सौन्दर्य फीका और निम्नोत्तम लगाने लगा, उसी दिन से राजकुमारी इस सन्देह के कारण बीमार पड़ गयी और घाट पकड़ ली।

राजा भीषण को भी यह कहला पड़ा कि तबारा में सौन्दर्य तो मैंने कई बार देखा है, पर पुष्पवल्ली का सौन्दर्य अद्वितीय है, अग्रिम है, उस सौन्दर्य के सामने मेनका और उर्वशी की तुल्य है।

पर वह रहस्य कालीदास और विष्णु के असाध्य किसी को भी ज्ञात नहीं था, आगे चलकर कालीदास ने 'पुष्प वल्ली सौन्दर्य' नाम से एक ग्रन्थ की रचना की जो सौन्दर्य शास्त्र की दृष्टि से अद्वितीय है, पूर्ण कविता शक्ति के सहारे कालीदास ने पुष्पवल्ली की तज-सिद्ध का वर्णन इस ग्रन्थ में किया है, और यह ग्रन्थ आज भी सौन्दर्य काव्य की दृष्टि से अद्वितीय माना जाता है।



“सौन्दर्य पाक” निर्माण विधि

मेरे पास विष्णु की सौन्दर्यकल्प नामक पुस्तक की प्रामाणिक प्रति उपलब्ध है और उसके अनुसार इसका निर्माण कर जिस-जिस को भी इस शोधिका क्षेत्रन कराया है, एक सप्ताह में ही इसके आश्चर्यजनक परिणाम प्राप्त हुए हैं।

पीछे जो बनीस आयुर्वेदिक शोधियों का विवरण आया है, उन सब को कूट-पीस कर पाउडर की तरह बना कर अन्नम रख दो, और फिर शोधिका को अलग-अलग शोधिका के रस में घोटें, आदले मात्र और पके हुए होने चाहिए, जब सभी शोधिकाओं को अलग-अलग घोट ले तब सबको एकत्र कर बड़ी खरल में लगभग छः घण्टे उसे घोटें और एक रस कर दें।

इसके बाद शुद्ध पारद को मांघन कर मात्र पाँच रत्नी पारा साह रक्षित बना कर इस पूरे कल्प में उसे घोटें और एक रस कर दें, बांटेने समय इस बात का ध्यान रहे कि इस कल्प में किसी प्रकार की चाँदनी न रहे, इसके बाद पूरी रात को एक मलमल के कपड़े में बांध ले और बड़ी कड़ाही में बीस किलो पानी डाल कर उसमें यह पोटली लटका दें, इस बात का ध्यान रहे कि यह पोटली कड़ाही के तल को छूने न पावे, और आँच जला कर हने पकावे, जब पानी कम पड़ जाय तो कड़ाही में और पानी डाले, लगभग आठ घण्टे में यह कल्प पक जाता है।

फिर पोटली खोल कर इस सामग्री को बाहर निकाल दें और इसमें आधा किलो सहृद दाल कर फिर घोटें तो यह सुन्दर कल्प तैयार हो जाता है, फिर इस कल्प की बने के प्रकार की गोवियाँ बना ले और मिश्र दो गोली मुक्क शाम मेकन करें, गोली लेने के बाद आधा किलो दूध पीने तो बड़ तीस दिनों में अद्वितीय सुन्दरी बन जाती है। ●

शिव महाभूत

शायद
नाथ की साधन
है, भगवान जि
दिया था भग
कर ली थी, कु
दक्ष बनने का

धका
क्रियाओं में स
आदिष्ट महीने
बास

अपने जीवन
एक
नहीं बाहेग

पोडरी सि

मा
साधना की
साधना की
जा सकना
लेना है क
कोरे दोषों
हबारी कि

एनां शाय
कोटि के

आपके

प्रत्यक्ष सिद्धि साधना

शिव महासृष्ट्युजय साधना १३.७.८७ से १८.७.८७ तक

श्रावण महिना तो भगवान शिव का सिद्धिदायक महीना है, जब भगवान भोले नाथ की साधना करने से वे एक पल में प्रसन्न होकर भक्त की सारी इच्छाएं पूरी कर देते हैं, भगवान शिव की साधना तो श्रावण ने सम्पन्न कर अपनी सका को सोने की बना दिया था भगवान श्रीराम ने भोलेनाथ रामेश्वरम् की पूजा करके लंका पर विजय प्राप्त कर ली थी, कुबेर ने शिव साधना कर अक्षय्य धन सम्पत्ति प्राप्त कर देवताओं का कोपा-ध्वंस करने का गौरव प्राप्त किया था।

प्रकाल मृत्यु निवारण शत्रुमारण, शिव सम्मोहन, शंकर वशीकरण आदि क्रियाओं से सम्बन्धित यह जिविर संसार का दुर्लभ जिविर कहा जाता है, और यह भी श्रावण महीने में, ऐसा सुयोग तो जीवन में प्राप्त हो ही नहीं सकता।

वास्तव में ही जो सोभाग्यशाली है, वे ही इस अद्वितीय जिविर में भाग लेकर अपने जीवन के सारे मनोरथ पूर्ण कर सकेंगे।

एक ऐसी साधना जो आपके जीवन का सोभाग्य है, और जिसे घाप छोड़ना नहीं चाहेंगे, सूक्ष्म गोपनीय मन्त्रों और रहस्यों के साथ।

पोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना

साधनाएं तो संसार में संकष्टों हैं, मगर पोडशी त्रिपुर सुन्दरी जैसी महाविद्या साधना तो जीवन का सोम रस कहल जा सकता है, इस एक साधना में ही एक सी आठ साधनाएं समाहित होती हैं, इस एक साधना के द्वारा ही समस्त सिद्धियों को प्राप्त किया जा सकता है, वास्वों के अनुसार जो पोडशी त्रिपुर सुन्दरी महाविद्या साधना सिद्ध कर लेता है, वह कुबेर के समान धनी, इन्द्र के समान साम्राज्यपति कामदेव के समान सुन्दर और योगियों के समान सर्वसिद्धि युक्त परम योगी बन जाता है, जिसके चरणी में हजारों हजारों सिद्धियां न्योछावर रहती हैं।

वह धमाका ही होगा, जो ऐसी महाविद्या साधना जिविर में भी भाग न ले सके, ऐसी साधना तो जीवन में सोभाग्य उदय होने पर ही प्राप्त हो सकती है।

एक महाविद्या साधना जो समस्त संसार में हलचल मचा देने वाली और उच्च-कोटि के योगियों के लिए भी दुर्लभ है।

गोपनीय सिद्धिदायक मन्त्रों और रहस्यों ने धीत-प्रोत एक ऐसी साधना, जो आपके जीवन का सोभाग्य कही जा सकती है।

बिद्वत् की दो महान साधनाएं

जून १९८७ में

क्या आप इन शिविरों में भाग ले रहे हैं
यदि हां, तो निश्चय ही आप सौभाग्यशाली हैं।

हनुमान प्रत्यक्ष सिद्धि शिविर

१५-६-८७ से २०-६-८७ तक

सर्वथा मौलिक अप्रकाशित तंत्रों-मंत्रों से युक्त अद्वितीय सिद्धि शिविर, जो वास्तव में ही समस्त दुखों से छुटकारा दिलाने में समर्थ है....एक दुर्लभ शिविर जो विशेष रूप से आपके लिए है।

मातंगी महाविद्या सिद्धि शिविर

२२-६-८७ से २७-६-८७ तक

समस्त सिद्धियों को देने वाली, एक ऐसी महाविद्या साधना, जो प्रत्यक्ष साधक करता है, जिसको उपासना तो प्रत्येक योगी करना चाहता है। जिसके प्रत्यक्ष दर्शन की इच्छा तो जन-जन की भावना है।

फिर आप ऐसे अद्वितीय शिविर में भाग लेने से वंचित क्यों रहे, ऐसा अवसर शायद ही सम्भव हो।

एक से एक बढ़कर साधना सिद्धियां शिविर

भाग लें, समाज के श्रेष्ठी जन बनें

सम्पर्क—मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान श.० श्रीमाखी मार्ग, हार्दकोट कोलोनी, जोधपुर (राज.)

